CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

1. शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो ।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो ।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि ख़ुद मर के ।
किसने कहा पाप है ? अनुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना ? [5 अंक]

1(क). कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में शांति का संबंध सामाजिक समानता और सुख के न्यायपूर्ण बँटवारे से जोड़ा गया है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: कथन का आधार कवि कहता है कि जब तक सबका सुख-भाग समान नहीं होगा, तब तक शांति नहीं हो सकती। किसी व्यक्ति के पास बहुत अधिक और किसी के पास बहुत कम होना समाज में असंतोष उत्पन्न करता है।

चरण 2: शर्त का अर्थ इसलिए केवल युद्ध न होना पर्याप्त नहीं है। शोषण और विषमता मिटाकर सभी को सुख तथा जीवन की सुविधाओं में उचित हिस्सा देना आवश्यक है। इसी समानता से स्थायी शांति संभव होती है।

चरण 3: निष्कर्ष शांति के लिए आवश्यक है कि सुख का बँटवारा सबमें समान हो; न किसी को बहुत अधिक मिले, न किसी को बहुत कम।

त्वरित सुझाव: शांति की शर्त पूछे जाने पर आरंभिक चार पंक्तियों में आए सुख के समान बँटवारे को उत्तर का केंद्र बनाएँ।

1(ख). युद्ध क्षेत्र को तेजस्वी किस प्रकार छीन लेते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में तेजस्वी व्यक्ति अन्याय के आगे झुकने के स्थान पर अपने अधिकार के लिए साहसपूर्वक संघर्ष करता है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: संबंधित पंक्तियाँ कवि कहता है कि न्यायोचित अधिकार माँगने से न मिलें तो तेजस्वी व्यक्ति लड़कर उन्हें प्राप्त करते हैं। वे केवल याचना करते रहने से संतुष्ट नहीं होते।

चरण 2: संघर्ष की प्रकृति तेजस्वी युद्धभूमि में निर्भय होकर पराक्रम दिखाते हैं। वे विजय प्राप्त करने अथवा अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए तैयार रहते हैं। उनका साहस न्याय के पक्ष में सक्रिय संघर्ष का रूप लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष तेजस्वी युद्धक्षेत्र में साहसपूर्वक लड़कर, विजय प्राप्त करके अथवा अपने प्राणों की आहुति देकर अपना अधिकार छीन लेते हैं।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में लड़ना, विजय और आत्मबलिदान को जोड़कर तेजस्वी के साहस का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करें।

1(ग). न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि स्वत्व अर्थात अपने उचित अधिकार की रक्षा के लिए सक्रिय और निर्भय प्रयास का समर्थन करता है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: पहला उपाय मनुष्य को पहले अपने न्यायोचित अधिकार की माँग करनी चाहिए। अधिकार का आधार न्याय होना चाहिए; किसी दूसरे की वस्तु पर अनुचित अधिकार जमाना पद्यांश का संदेश नहीं है।

चरण 2: अधिकार न मिलने पर माँगने से अधिकार न मिलें तो मनुष्य को अन्याय के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक संघर्ष करना चाहिए। कवि के अनुसार न्याय का खड्ग उठाकर अपने स्वत्व की रक्षा करना पाप नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य को पहले न्यायोचित अधिकार माँगना चाहिए और न मिलने पर निर्भय होकर संघर्ष द्वारा उसे प्राप्त करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले माँग और फिर संघर्ष का क्रम रखें, क्योंकि यही क्रम पद्यांश की पंक्तियों में दिया गया है।

1(घ). कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रसंग में कृष्ण का उद्देश्य युधिष्ठिर को शोषितों के अधिकार और न्याय की रक्षा के लिए प्रेरित करना है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: शोषण की समस्या पद्यांश में धर्मराज से पूछा गया है कि यदि शोषितों को माँगने पर भी अपना अधिकार न मिले, तो वे कैसे जिएँ। इस प्रश्न के माध्यम से अन्याय को चुपचाप सहने की समस्या सामने आती है।

चरण 2: प्रेरणा का कारण कृष्ण युधिष्ठिर को समझाते हैं कि न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पाप नहीं है। न्याय की रक्षा हेतु आवश्यक युद्ध से पीछे हटना शोषितों को उनके अधिकार से वंचित रहने देना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष कृष्ण युधिष्ठिर को शोषितों के न्यायोचित अधिकार दिलाने और अन्याय का अंत करने के लिए युद्ध की प्रेरणा दे रहे हैं।

त्वरित सुझाव: युद्ध का कारण लिखते समय न्याय और शोषितों के अधिकार पर ध्यान दें; केवल विजय या राज्य प्राप्ति न लिखें।

1(ङ). यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो आपको क्या करना चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश अपने अधिकार से वंचित व्यक्ति को अन्याय के सामने निष्क्रिय न रहने और न्याय के लिए दृढ़ रहने का संदेश देता है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: अधिकार की माँग यदि मुझे अन्यायपूर्वक अधिकार से वंचित किया जाए तो मैं पहले अपना उचित अधिकार माँगूँगा और अन्याय का विरोध करूँगा। अपने पक्ष का आधार न्याय और अधिकार की वैधता को बनाऊँगा।

चरण 2: दृढ़ संघर्ष माँगने पर भी अधिकार न मिले तो मैं साहसपूर्वक और संगठित ढंग से उसके लिए संघर्ष करूँगा। पद्यांश की प्रेरणा के अनुसार भय या निराशा के कारण अन्याय स्वीकार नहीं करूँगा।

चरण 3: निष्कर्ष मुझे अपना न्यायोचित अधिकार माँगना चाहिए और न मिलने पर निर्भय, दृढ़ संघर्ष करके उसे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: व्यक्तिगत प्रतिक्रिया को पद्यांश के संदेश से जोड़ें: अधिकार माँगना, अन्याय का विरोध और साहसपूर्ण संघर्ष।

---

2. भारत प्राचीनतम संस्कृति का देश है । यहाँ दान पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है । जब दान देने को धार्मिक कृत्य मान लिया गया तो निश्चित तौर पर दान लेने वाले भी होंगे । हमारे समाज में भिक्षावृत्ति की ज़िम्मेदारी समाज के धर्मात्मा, दयालु व सज्जन लोगों की है ।

भारतीय समाज में दान लेना व दान देना – दोनों धर्म के अंग माने गए हैं । कुछ भिखारी खानदानी होते हैं क्योंकि पुश्तों से उनके पूर्वज धर्म स्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं । कुछ भिखारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के हैं जो देश में छोटी-सी विपत्ति आ जाने पर भीख का कटोरा लेकर भ्रमण के लिए निकल जाते हैं । इसके अलावा अनेक श्रेणी के और भी भिखारी होते हैं ।

कुछ भिखारी परिस्थिति से बनते हैं तो कुछ बना दिए जाते हैं । कुछ शौकिया भी इस व्यवसाय में आ गए हैं । जन्मजात भिखारी अपने स्थान निश्चित रखते हैं । कुछ भिखारी अपनी आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर देते हैं । आधुनिकता के कारण अनेक वृद्ध मज़बूरीवश भिखारी बनते हैं । ग़रीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं । काम न मिलना भी भिक्षावृत्ति को जन्म देता है । कुछ अपराधी बच्चों को उठा ले जाते हैं तथा उनसे भीख मँगवाते हैं । वे इतने हैवान हैं कि भीख माँगने के लिए बच्चों का अंग-भंग भी कर देते हैं ।

भारत में भिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है । देवराज इन्द्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में थे । इन्द्र ने कर्ण से अर्जुन की रक्षा के लिए उनके कवच व कुण्डल ही भीख में माँग लिए । विष्णु ने वामन अवतार लेकर भीख माँगी । धर्मशास्त्रों ने दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जिसके कारण भिक्षावृत्ति को भी धार्मिक मान्यता मिल गई । पूजा-स्थल, तीर्थ, रेलवे स्टेशन, बस-स्टैण्ड, गली-मुहल्ले-आदि हर जगह भिखारी दिखाई देते हैं । इस कार्य में हर आयु का व्यक्ति शामिल है । साल-दो साल के दुध मुँहे बच्चे से लेकर अस्सी-नब्बे वर्ष के बूढ़े तक को भीख माँगते देखा जा सकता है ।

भीख माँगना भी एक कला है, जो अभ्यास या सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जा सकती है । अपराधी बाकायदा इस काम की ट्रेनिंग देते हैं । भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर भी माँगी जाती है । भीख माँगने के लिए इतना आवश्यक है कि दाता के मन में करुणा जगे । अपंगता, कुरूपता, अशक्तता, वृद्धावस्था आदि देखकर दाता करुणामय होकर परंपरानिर्वाह कर पुण्य प्राप्त करता है । [15 अंक]

2(क). गद्यांश का समुचित शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विषय को संक्षेप में व्यक्त करता है और उसके विविध प्रसंगों को समेटता है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानें गद्यांश में भिक्षावृत्ति की परंपरा, उसके धार्मिक आधार, उसके फैलने के सामाजिक कारण और भीख

माँगने के अलग-अलग तरीकों का वर्णन किया गया है। सभी अनुच्छेद इसी मुख्य विषय से जुड़े हैं।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य भिक्षावृत्ति और भारतीय समाज शीर्षक इस पूरे विवेचन को समेटता है। इससे धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक परिस्थितियों और भिक्षावृत्ति के विविध रूपों का संबंध स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: "भिक्षावृत्ति और भारतीय समाज।

त्वरित सुझाव: शीर्षक ऐसा चुनें जो केवल दान या गरीबी तक सीमित न हो, बल्कि पूरे गद्यांश में वर्णित भिक्षावृत्ति को समेटे।

2(ख). "भारत में भिक्षा का इतिहास प्राचीन है" — सप्रमाण सिद्ध कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन को सप्रमाण सिद्ध करने के लिए गद्यांश में दिए स्पष्ट उदाहरणों का उपयोग करना चाहिए। यहाँ पौराणिक प्रसंग भिक्षा की प्राचीनता के प्रमाण हैं।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: इन्द्र का उदाहरण गद्यांश के अनुसार देवराज इन्द्र ने अर्जुन की रक्षा के लिए कर्ण से उसके कवच और कुण्डल भिक्षा में माँग लिए थे। यह प्रसंग बताता है कि भिक्षा का उल्लेख प्राचीन पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। लेखक इसी उदाहरण से भारत में भिक्षा की पुरानी परंपरा की ओर संकेत करता है।

चरण 2: विष्णु और धर्मशास्त्रों का प्रमाण गद्यांश में दूसरा उदाहरण विष्णु के वामन अवतार का है। विष्णु ने इस अवतार में भिक्षा माँगी थी। इसके अतिरिक्त धर्मशास्त्रों में दान की महिमा का वर्णन है, जिससे दान और भिक्षा को धार्मिक स्वीकृति मिली। ये प्रसंग गद्यांश के कथन को पुष्ट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इन्द्र द्वारा कर्ण से कवच-कुण्डल माँगना और विष्णु द्वारा वामन अवतार में भिक्षा माँगना सिद्ध करते हैं कि भारत में भिक्षा की परंपरा प्राचीन है। धर्मशास्त्रों में दान की महिमा ने भी इसे धार्मिक मान्यता दी।

त्वरित सुझाव: सप्रमाण प्रश्न में दोनों पौराणिक उदाहरणों को स्पष्ट लिखें और प्रत्येक का संबंध भिक्षा की प्राचीनता से जोड़ें।

2(ग). "भीख माँगना एक कला है" — इस कला के विविध रूपों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में भीख माँगने को सीखी जा सकने वाली कला बताया गया है, जिसका मुख्य लक्ष्य दाता की करुणा जगाना है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: अभिव्यक्ति के अलग-अलग तरीके गद्यांश के अनुसार भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर माँगी जाती है। इन तरीकों में कभी दुःख का प्रदर्शन होता है, कभी मनोरंजन और कभी दबाव का सहारा लिया जाता है। उद्देश्य सामने वाले का ध्यान खींचकर उससे कुछ प्राप्त करना होता है।

चरण 2: करुणा जगाने की युक्ति अपंगता, कुरूपता, अशक्तता तथा वृद्धावस्था का प्रदर्शन भी दाता के मन में दया जगाता है। गद्यांश कहता है कि इस कला को अभ्यास अथवा सूक्ष्म निरीक्षण से सीखा जा सकता है और अपराधी इसके लिए प्रशिक्षण भी देते हैं। इस प्रकार भाव-भंगिमा और अपनी दशा का प्रदर्शन इसके प्रमुख साधन हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भीख माँगने की कला के रूप हैं: रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर अथवा हँसकर भीख माँगना तथा अपंगता, अशक्तता और वृद्धावस्था दिखाकर दाता की करुणा जगाना।

त्वरित सुझाव: विविध रूप पूछे जाएँ तो पहले गद्यांश में दिए चार व्यवहार लिखें, फिर सबका साझा उद्देश्य करुणा जगाना बताएँ।

2(घ). समाज में भिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी मान्यताएँ किस प्रकार सहायक होती हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश सामाजिक मान्यताओं और भिक्षावृत्ति के विस्तार के बीच संबंध स्थापित करता है। दान से पुण्य पाने का विश्वास इस संबंध का आधार है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश का कथ्य और उसमें प्रयुक्त स्पष्ट उदाहरण हैं।

चरण 1: दान और भिक्षा की धार्मिक स्वीकृति हमारे समाज में दान देना और दान लेना दोनों धर्म के अंग माने गए हैं। दान-पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग समझा जाता है। धर्मशास्त्रों ने भी दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है। फलतः भिक्षा देने वाले को पुण्य और भिक्षा लेने वाले को धार्मिक स्वीकृति मिलने लगती है।

चरण 2: परंपरा का निरंतर पोषण दाता भिखारी की अपंगता, अशक्तता या वृद्धावस्था देखकर करुणामय हो जाता है और दान देकर परंपरा निभाने तथा पुण्य पाने का अनुभव करता है। इस विश्वास के कारण भीख देने की प्रथा लगातार चलती रहती है। गद्यांश इसी आधार पर समाज के धर्मात्मा, दयालु और सज्जन लोगों की भूमिका भी रेखांकित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष दान से पुण्य और मुक्ति मिलने तथा दान लेने-देने को धर्म मानने की मान्यताएँ भिक्षावृत्ति को धार्मिक समर्थन देती हैं। दाता करुणावश और पुण्य पाने के लिए भीख देता है, जिससे यह प्रथा बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: कारण और परिणाम को जोड़ें: पुण्य की मान्यता दान को बढ़ाती है और लगातार मिलने वाला दान भिक्षावृत्ति को पोषण देता है।

2(ङ). भिखारी व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न गद्यांश में बताए गए भिक्षावृत्ति के विभिन्न वर्गों की पहचान कराता है।
- उत्तर में भिखारी बनने के कारण और व्यवसाय चलाने के तरीके गद्यांश के आधार पर बताने हैं।

चरण 1: परंपरा और व्यवसाय से जुड़े स्वरूप गद्यांश में खानदानी भिखारियों का उल्लेख है, जिनके पूर्वज पीढ़ियों से धर्मस्थलों पर अड्डा जमाए हुए हैं। जन्मजात भिखारियों के स्थान निश्चित होते हैं; कुछ अपनी अधिक आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर भी देते हैं। कुछ शौकिया इस व्यवसाय में आते हैं। विपत्ति के समय सहायता माँगते घूमने वाले अंतर्राष्ट्रीय स्तर के भिखारियों का भी उल्लेख है।

चरण 2: मजबूरी और अपराध से जुड़े स्वरूप कुछ लोग परिस्थितिवश भिखारी बनते हैं। गरीबी, बेरोजगारी, बेसहारापन तथा वृद्धावस्था उन्हें भीख माँगने को विवश करते हैं। इसके विपरीत कुछ लोगों को अपराधी भिखारी बना देते हैं। वे बच्चों का अपहरण करके उनसे भीख मँगवाते हैं और कभी उनका अंग-भंग भी कर देते हैं। इस प्रकार गद्यांश स्वेच्छा, परंपरा, विवशता और अपराध से जुड़े स्वरूप दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भिक्षावृत्ति के प्रमुख स्वरूप हैं : खानदानी, जन्मजात, शौकिया, अंतर्राष्ट्रीय, परिस्थितिवश बने तथा अपराधियों द्वारा बनाए गए भिखारी।

त्वरित सुझाव: विभिन्न स्वरूप पूछे जाने पर केवल भीख माँगने की मुद्राएँ न लिखें; गद्यांश में बताए वर्ग और उनके कारण पहचानें।

2(च). भिखारी दाता के मन में किस भाव को जगाते हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न भिखारी के व्यवहार और दाता की भावनात्मक प्रतिक्रिया का संबंध समझने पर आधारित है।

- उत्तर का आधार गद्यांश का कथन है कि भीख पाने के लिए दाता के मन में करुणा जगना आवश्यक है।

चरण 1: जगाए जाने वाले भाव को पहचानना भिखारी दाता के मन में करुणा अथवा दया का भाव जगाते हैं। वे अपनी अपंगता, अशक्तता, वृद्धावस्था या असहाय स्थिति की ओर उसका ध्यान आकर्षित करते हैं। रोने, गाने अथवा दूसरी मुद्राओं से भी वे अपनी विवशता का प्रभाव पैदा करते हैं। गद्यांश इन तरीकों को भीख माँगने की कला के रूप में प्रस्तुत करता है।

चरण 2: भाव जगाने का उद्देश्य स्पष्ट करना करुणा जागने पर दाता उनकी सहायता करने के लिए प्रेरित होता है और उन्हें भीख देता है। वह दान देने की परंपरा का पालन करके पुण्य प्राप्त करने का अनुभव भी करता है। इसलिए दया जगाना भिखारी के लिए भीख पाने का साधन है। उत्तर में भाव के साथ यह उद्देश्य भी लिखना आवश्यक है, क्योंकि प्रश्न में किस भाव के साथ क्यों भी पूछा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष भिखारी दाता में करुणा और दया का भाव जगाते हैं, ताकि वह उनकी असहाय अवस्था से द्रवित होकर उन्हें भीख दे और दान की परंपरा निभाए।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो अंग रखें : पहले करुणा का नाम लिखें, फिर बताएँ कि उससे दाता भीख देने को प्रेरित होता है।

2(छ). आपके विचार से भिक्षावृत्ति से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारपरक उत्तर में गद्यांश में बताए गए गरीबी, बेरोजगारी, बेसहारेपन और अपराध जैसे कारणों से समाधान जोड़ना चाहिए।
- समाधान का उद्देश्य जरूरतमंद व्यक्ति को आश्रय और आत्मनिर्भरता देना तथा शोषण रोकना है।

चरण 1: विवशता के कारणों का निवारण भिक्षावृत्ति घटाने के लिए गरीब और बेरोजगार लोगों को शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण तथा रोजगार के अवसर मिलने चाहिए। बेसहारा वृद्धों, अशक्तों और दिव्यांगों के लिए भोजन, उपचार और सुरक्षित आश्रय की व्यवस्था हो। ये उपाय गद्यांश में वर्णित उन परिस्थितियों को दूर करेंगे जिनसे विवश होकर लोग भीख माँगने लगते हैं। केवल भीख देना उनकी आजीविका की समस्या का स्थायी समाधान नहीं करता।

चरण 2: शोषण रोकना और सहायता की दिशा बदलना बच्चों का अपहरण करके उनसे भीख मँगवाने वाले गिरोहों पर कठोर कार्रवाई हो और बच्चों को संरक्षण तथा शिक्षा दी जाए। समाज सहायता को पुनर्वास, भोजन, उपचार और काम उपलब्ध कराने से जोड़े। जरूरतमंदों की दयापूर्वक सहायता करते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाए। इस तरह सामाजिक सहयोग और प्रशासन की सक्रियता से भिक्षावृत्ति के कारण तथा उसका संगठित शोषण दोनों कम होंगे।

चरण 3: निष्कर्ष मेरे विचार से रोजगार, शिक्षा, पुनर्वास, वृद्धों और अशक्तों की देखभाल तथा बच्चों से भीख मँगवाने वालों पर कठोर कार्रवाई द्वारा भिक्षावृत्ति से छुटकारा पाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: अपने सुझावों को गद्यांश के कारणों से जोड़ें : बेरोजगारी के लिए काम, बेसहारेपन के लिए आश्रय और शोषण के विरुद्ध कार्रवाई।

2(ज). उपसर्ग-प्रत्यय अलग कीजिए : बाकायदा, धार्मिक । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले तथा प्रत्यय उसके अंत में जुड़ता है।
- प्रत्यय जुड़ने पर कभी मूल शब्द के स्वर में परिवर्तन होता है; धार्मिक में धर्म का अ, आ में बदलता है।

चरण 1: बाकायदा में उपसर्ग अलग करना बाकायदा शब्द में बा उपसर्ग है और कायदा मूल शब्द है। अतः शब्द का विभाजन बा + कायदा होगा। यहाँ बा शब्द के आरंभ में जुड़ा है, इसलिए इसे प्रत्यय नहीं कहा जाएगा।

चरण 2: धार्मिक में प्रत्यय अलग करना धार्मिक शब्द धर्म में इक प्रत्यय जुड़ने से बना है : धर्म + इक = धार्मिक। प्रत्यय लगने पर धर्म का रूप धार्म हो गया है। इसलिए केवल दिखाई देने वाले अक्षरों के आधार पर धार्म को स्वतंत्र मूल शब्द न लिखें; मूल शब्द धर्म और प्रत्यय इक लिखना उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष बाकायदा : बा (उपसर्ग) + कायदा (मूल शब्द)। धार्मिक : धर्म (मूल शब्द) + इक (प्रत्यय)।

त्वरित सुझाव: शब्द के आरंभ और अंत दोनों को देखें; धार्मिक का मूल धर्म है और प्रत्यय जुड़ने पर स्वर बदलता है।

2(झ). संयुक्त वाक्य में बदलिए — ग़रीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक से जुड़ते हैं।
- रूपांतरण करते समय मूल वाक्य में गरीबी और भीख माँगने के बीच का कारण तथा परिणाम संबंध सुरक्षित रखना चाहिए।

चरण 1: सरल वाक्य के आशय की पहचान दिए गए वाक्य में गरीबी के कारण कारणसूचक पदबंध है और बेसहारा लोगों का भीख माँगना उसका परिणाम है। इसे संयुक्त वाक्य में बदलने के लिए गरीबी वाले अंश को भी स्वतंत्र कथन बनाया जाएगा।

चरण 2: दो स्वतंत्र उपवाक्य जोड़ना पहला उपवाक्य होगा : बेसहारा लोग गरीब हैं। दूसरा होगा : वे भीख माँगने लगते हैं। दोनों स्वतंत्र कथनों को इसलिए से जोड़ने पर कारण और परिणाम का वही संबंध बना रहता है। यहाँ क्योंकि का प्रयोग करके एक आश्रित उपवाक्य बनाने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बेसहारा लोग गरीब हैं, इसलिए वे भीख माँगने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: कारणसूचक पदबंध को स्वतंत्र उपवाक्य बनाएँ और इसलिए से परिणाम जोड़ें; दोनों उपवाक्यों में पूर्ण क्रिया हो।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : विज्ञापनों का संसार [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक निष्कर्ष दिया जाता है।
- विज्ञापन के माध्यम, उपयोगिता, प्रभाव, सीमाएँ और उपभोक्ता की सावधानी पर संतुलित विचार रखना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और विषयवस्तु शीर्षक के बाद भूमिका में दैनिक जीवन में विज्ञापनों की उपस्थिति बताएँ। मुख्य भाग में अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, होर्डिंग और इंटरनेट जैसे माध्यमों तथा व्यापार और जनजागरण में उनके उपयोग का विवेचन करें। फिर भ्रामक दावों और अनावश्यक खरीद की समस्या उठाएँ। निष्कर्ष में विज्ञापनदाता की जिम्मेदारी तथा उपभोक्ता के विवेक का महत्त्व रखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **विज्ञापनों का संसार**

आज का जीवन विज्ञापनों से घिरा हुआ है। सुबह अखबार खोलने से लेकर रात को मोबाइल देखने तक अनेक वस्तुओं और सेवाओं के संदेश हमारे सामने आते रहते हैं। कहीं आकर्षक चित्र ध्यान खींचते हैं, तो कहीं मधुर गीत और प्रभावशाली नारे। विज्ञापन आधुनिक व्यापार और जनसंचार का महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं।

विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संपर्क स्थापित करते हैं। उनसे नई वस्तुओं, उनकी विशेषताओं, कीमतों और उपलब्धता की जानकारी मिलती है। अखबार, पत्रिकाएँ, रेडियो, दूरदर्शन, दीवारों पर लगे पोस्टर और इंटरनेट इनके प्रमुख माध्यम हैं। व्यापारियों को ग्राहक मिलते हैं और उपभोक्ता विभिन्न वस्तुओं की तुलना कर पाते हैं। विज्ञापन निर्माण से लेखकों, कलाकारों, चित्रकारों और अन्य कामगारों को रोजगार भी मिलता है।

इनका उपयोग केवल वस्तुएँ बेचने तक सीमित नहीं है। स्वच्छता, शिक्षा, जल संरक्षण और स्वास्थ्य संबंधी संदेश भी विज्ञापनों द्वारा लोगों तक पहुँचाए जाते हैं। रक्तदान और सड़क सुरक्षा जैसे विषयों पर अच्छे विज्ञापन समाज को जागरूक कर सकते हैं। सरल भाषा और याद रहने वाले संदेश किसी उपयोगी विचार का व्यापक प्रसार करते हैं।

किंतु विज्ञापनों की चमक के पीछे कई समस्याएँ भी हैं। कुछ विज्ञापन वस्तुओं के गुण बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं और कमियाँ छिपा लेते हैं। प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रभाव में ग्राहक बिना जाँच किए वस्तु खरीद सकता है। बच्चे आकर्षक दृश्यों से प्रभावित होकर अनावश्यक वस्तुओं की माँग करते हैं। लगातार नए उत्पादों का प्रचार दिखावे और जरूरत से अधिक खर्च की प्रवृत्ति को भी बढ़ाता है।

इसलिए विज्ञापनदाता को सत्य, शालीनता और सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करना चाहिए। किसी के रूप, लिंग या आर्थिक स्थिति को हीन दिखाकर वस्तु बेचना अनुचित है। उपभोक्ता को भी केवल नारे देखकर निर्णय नहीं लेना चाहिए। वस्तु की गुणवत्ता, उपयोगिता और कीमत की जाँच आवश्यक है। विज्ञापन सूचना दें और उपभोक्ता विवेक से चुनाव करे, तभी विज्ञापनों का संसार समाज के लिए उपयोगी बन सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञापन उपयोगी सूचना और जनजागरण का माध्यम हैं। सत्यपूर्ण प्रचार तथा सजग उपभोक्ता व्यवहार से उनकी उपयोगिता बढ़ती है और भ्रामक प्रभाव घटता है।

त्वरित सुझाव: निबंध में लाभ और हानि दोनों समझाएँ तथा अंतिम अनुच्छेद में जिम्मेदार विज्ञापन और विवेकपूर्ण खरीद का व्यावहारिक सुझाव दें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : वन रहेंगे – हम रहेंगे

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और निष्कर्ष होते हैं। यह विषय वन तथा मानव-जीवन की परस्पर निर्भरता स्पष्ट करता है।
- वनों का महत्त्व, उनके विनाश के कारण, उसके परिणाम और संरक्षण के व्यावहारिक उपाय विषय के आवश्यक पक्ष हैं।

चरण 1: विषय और रूपरेखा भूमिका में वन तथा मानव-जीवन का संबंध रखें। विस्तार में वायु, जल, मिट्टी और जीव-जंतुओं के लिए वनों का योगदान बताएँ। फिर कटाई के दुष्परिणाम तथा संरक्षण में सरकार, समाज और व्यक्ति की भूमिका लिखें। अंत में भविष्य की सुरक्षा के लिए वन बचाने का संकल्प दें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध **वन रहेंगे – हम रहेंगे**

वन पृथ्वी की हरियाली भर नहीं, जीवन के आधार हैं। मनुष्य भोजन, जल और स्वच्छ वायु के लिए जिस प्राकृतिक व्यवस्था पर निर्भर है, उसे संतुलित रखने में वनों की बड़ी भूमिका है। इसीलिए वनों की रक्षा वास्तव में हमारे भविष्य की रक्षा है।

पेड़ प्रकाश-संश्लेषण के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वन अनेक पशु-पक्षियों के आश्रय और जैव-विविधता के भंडार हैं। उनकी जड़ें मिट्टी को बाँधे रखती हैं तथा वर्षाजल को भूमि में समाने में सहायता करती हैं। वन स्थानीय जलचक्र और तापमान को भी प्रभावित करते हैं। उनसे फल, औषधियाँ तथा अनेक समुदायों को आजीविका मिलती है।

दुर्भाग्य से बढ़ती बस्तियों, अनियोजित निर्माण, खनन और लकड़ी की माँग ने जंगलों को क्षति पहुँचाई है। वन घटने से जीवों के आवास नष्ट होते हैं, मिट्टी का कटाव बढ़ता है और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है। अल्पकालिक लाभ के लिए की गई कटाई का मूल्य आने वाली पीढ़ियों को चुकाना पड़ सकता है।

समाधान केवल पौधे लगा देना नहीं है। मौजूदा वनों को बचाना, अवैध कटाई रोकना और लगाए गए पौधों की देखभाल करना भी आवश्यक है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल प्रजातियाँ लगानी चाहिए। विकास की योजनाओं में पर्यावरण और वनवासी समुदायों के हितों का ध्यान रखा जाना चाहिए। नागरिक कागज की बचत, पुनः उपयोग और स्थानीय हरित क्षेत्रों की रक्षा में योगदान दे सकते हैं। विद्यालय बच्चों में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी विकसित कर सकते हैं।

हमें जंगलों को असीमित संसाधन समझने की भूल छोड़नी होगी। प्रकृति के साथ विवेकपूर्ण संबंध ही सुरक्षित जीवन का मार्ग है। यदि वन स्वस्थ रहेंगे तो हमारी धरती रहने योग्य बनी रहेगी। सचमुच, वन रहेंगे तभी हम रहेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष वन मानव-जीवन की आधारशिला हैं। उनका संरक्षण स्वच्छ पर्यावरण, जैव-विविधता और भावी पीढ़ियों के सुरक्षित

जीवन के लिए आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: महत्त्व, संकट और उपाय के क्रम से लिखें तथा हर अनुच्छेद को वन और मानव-जीवन के संबंध से जोड़ें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : शिक्षा का अधिकार [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय पर निबंध लिखते समय उसके अर्थ, आवश्यकता, बाधाओं और सुधार के उपायों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
- शिक्षा का अधिकार प्रत्येक बच्चे को सीखने और सम्मानपूर्ण जीवन की तैयारी का अवसर देने की भावना से जुड़ा है। समान अवसर तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इसके महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं।

चरण 1: निबंध की विषयवस्तु और योजना भूमिका में शिक्षा को व्यक्ति और समाज के विकास का आधार बताएँ। मुख्य भाग में अधिकार का आशय, वंचित बच्चों की समस्याएँ, विद्यालय की सुविधाएँ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण पर विचार रखें। निष्कर्ष में सरकार, अभिभावकों और समाज की साझा जिम्मेदारी स्पष्ट करें। केवल विद्यालय में प्रवेश को सफलता मानने के स्थान पर वास्तविक सीखने को केंद्र में रखें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध **शिक्षा का अधिकार**

शिक्षा मनुष्य को केवल अक्षर-ज्ञान नहीं देती; वह विवेक, आत्मविश्वास और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता भी विकसित करती है। शिक्षित व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पहचानकर समाज के विकास में योगदान दे सकता है। इसलिए शिक्षा को कुछ लोगों का विशेषाधिकार समझने के बजाय प्रत्येक बच्चे के अधिकार के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

शिक्षा का अधिकार यह भावना व्यक्त करता है कि किसी बच्चे की गरीबी, जाति, लिंग अथवा सामाजिक स्थिति उसके सीखने में बाधा न बने। भारत में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान इसी दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे परिवार की आर्थिक कठिनाई के कारण शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए विद्यालय के द्वार खुलते हैं।

किंतु अधिकार की घोषणा मात्र पर्याप्त नहीं है। अनेक बच्चे घरेलू काम, बाल-श्रम, दूर स्थित विद्यालय और सामाजिक भेदभाव के कारण नियमित पढ़ाई नहीं कर पाते। विशेष रूप से बालिकाओं तथा दिव्यांग बच्चों के सामने अतिरिक्त बाधाएँ आती हैं। विद्यालय में प्रवेश लेने के बाद भी बच्चा पढ़ना-लिखना न सीख पाए तो शिक्षा का उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

इस स्थिति को बदलने के लिए सुरक्षित विद्यालय, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, आवश्यक शिक्षण-सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षक चाहिए। कक्षा में ऐसा वातावरण हो जहाँ बच्चे प्रश्न पूछ सकें और बिना भय के सीख सकें। कठिनाई अनुभव करने वाले बच्चों को अतिरिक्त सहायता मिलनी चाहिए। अभिभावकों को नियमित उपस्थिति के प्रति सजग रहना चाहिए और समाज को बाल-श्रम तथा भेदभाव का विरोध करना चाहिए।

शिक्षा का अधिकार तभी सार्थक होगा जब हर बच्चा विद्यालय पहुँचे, वहाँ बना रहे और उपयोगी ज्ञान प्राप्त करे। सरकार की व्यवस्था, शिक्षक की संवेदनशीलता और नागरिकों का सहयोग मिलकर यह परिवर्तन ला सकते हैं। सबके लिए अच्छी शिक्षा ही समान अवसर वाले समाज और सशक्त राष्ट्र की नींव है।

चरण 3: निष्कर्ष शिक्षा का अधिकार प्रत्येक बच्चे को सीखने का समान अवसर देने का संकल्प है। उसकी सफलता प्रवेश, नियमित अध्ययन और गुणवत्तापूर्ण सीखने से तय होती है।

त्वरित सुझाव: अधिकार का अर्थ समझाने के बाद बाधाएँ और समाधान लिखें; निष्कर्ष में वास्तविक सीखने तथा साझा जिम्मेदारी पर जोर दें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : अबला नहीं है नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट प्रतिपादन, तर्कपूर्ण विस्तार और सार्थक निष्कर्ष होना चाहिए।
- नारी-सशक्तीकरण का आशय शिक्षा, सुरक्षा, सम्मान और निर्णय के समान अवसरों से है।

चरण 1: विषय और विचारों की रूपरेखा इस विषय में नारी को कमजोर मानने वाली रूढ़ धारणा का तर्कपूर्ण खंडन करना है। भूमिका में इस धारणा की समीक्षा, विस्तार में नारी की क्षमताएँ और उपलब्धियाँ तथा अंत में समान अवसर देने की आवश्यकता रखी जाएगी। उदाहरणों का उद्देश्य स्त्री की स्वतंत्र पहचान और योगदान को स्पष्ट करना है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध अबला नहीं है नारी

नारी को अबला कहना उसकी क्षमताओं और संघर्षों की उपेक्षा करना है। वह परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाती है। उसके धैर्य और संवेदनशीलता को दुर्बलता मान लेना अनुचित है। साहस केवल शारीरिक बल का नाम नहीं; कठिन परिस्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय लेना और अन्याय का सामना करना भी शक्ति है।

इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई ने अपने साहस से यह सिद्ध किया कि नेतृत्व और वीरता किसी एक लिंग की संपत्ति नहीं हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक महिलाओं ने जेल और यातनाएँ सहकर देश की सेवा की। आज महिलाएँ शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन, खेल और रक्षा जैसे क्षेत्रों में अपनी योग्यता प्रमाणित कर रही हैं। खेतों में श्रम करने वाली महिला, घर सँभालने वाली गृहिणी और कार्यालय में कार्य करने वाली कर्मचारी, सभी का योगदान सम्मान योग्य है।

फिर भी अनेक स्त्रियाँ भेदभाव, अशिक्षा, असुरक्षा और आर्थिक निर्भरता का सामना करती हैं। ये बाधाएँ उनकी स्वाभाविक कमजोरी का प्रमाण नहीं, सामाजिक असमानता का परिणाम हैं। बेटी की शिक्षा रोककर या उसे निर्णय का अधिकार न देकर समाज उसकी प्रतिभा को सीमित करता है। इसलिए केवल प्रशंसा पर्याप्त नहीं; समान अवसर और अधिकार व्यवहार में मिलने चाहिए।

परिवार को बेटियों और बेटों के पालन-पोषण में भेदभाव नहीं करना चाहिए। विद्यालयों में आत्मविश्वास और समानता की भावना विकसित होनी चाहिए। कार्यस्थलों पर सुरक्षित वातावरण, समान काम का समान पारिश्रमिक और सम्मानजनक व्यवहार आवश्यक हैं। घरेलू दायित्वों में पुरुषों की भागीदारी भी स्त्रियों को अपनी प्रतिभा विकसित करने का समय देती है।

नारी को दया की पात्र मानने के स्थान पर स्वतंत्र और समर्थ मनुष्य के रूप में स्वीकार करना होगा। उसकी गरिमा उसके अधिकारों के सम्मान से सुरक्षित होगी। अवसर, विश्वास और न्यायपूर्ण वातावरण मिलने पर वह हर क्षेत्र में नेतृत्व कर सकती है। नारी अबला नहीं, समाज की सृजनशील और संकल्पवान शक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी की क्षमता को रूढ़ धारणाओं से नहीं आँकना चाहिए। समान शिक्षा, सम्मान, सुरक्षा और निर्णय के अवसर उसके अधिकार हैं।

त्वरित सुझाव: विषय का विस्तार करते समय उपलब्धियों के साथ सामाजिक बाधाएँ और उनके व्यावहारिक समाधान अवश्य जोड़ें।

---

4. मोहल्ले में नए आए कुछ नवयुवकों की गतिविधियों पर आपको संदेह है और आपने ऐसी गतिविधियों को कैमरे में क़ैद भी किया है । संदेह का आधार बताते हुए पुलिस आयुक्त को उपयुक्त क़दम उठाने के लिए पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुलिस आयुक्त को लिखा जाने वाला पत्र औपचारिक, तथ्यपरक और स्पष्ट अनुरोध वाला होना चाहिए।
- संदेह के आधार तथा उपलब्ध साक्ष्य बताए जाएँ; जाँच से पहले किसी को अपराधी घोषित न किया जाए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषयवस्तु प्रेषक का पता और दिनांक लिखने के बाद पुलिस आयुक्त का पद व पता, विषय और संबोधन दिया जाएगा। पत्र में दिखाई दी गतिविधियों का समय, स्थान तथा स्वरूप बताएँगे। कैमरे में सुरक्षित दृश्यों का उल्लेख करके निष्पक्ष जाँच, गश्त और नागरिकों की सुरक्षा का अनुरोध करेंगे। अंत में धन्यवाद, समापन और प्रेषक का नाम रहेगा। नीचे स्थान और नाम आदर्श उत्तर

के लिए दिए गए हैं।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार
दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में
पुलिस आयुक्त
दिल्ली पुलिस
नई दिल्ली
विषय : मोहल्ले में संदिग्ध गतिविधियों की जाँच कराने का अनुरोध।
महोदय,
मैं शांति विहार का निवासी हूँ। हमारे मोहल्ले के मकान संख्या 38 में हाल में कुछ नवयुवक किराए पर रहने आए हैं। पिछले कुछ दिनों में उनकी गतिविधियों से मोहल्ले के निवासियों को चिंता हुई है। वे प्रायः देर रात बड़े बंद पैकेट वाहनों में लाते-ले जाते हैं। कुछ अपरिचित व्यक्ति थोड़ी देर के लिए वहाँ आते हैं और तुरंत लौट जाते हैं। दो अवसरों पर उन्हें पास के खाली मकान के ताले और प्रवेश-मार्ग को ध्यान से देखते भी पाया गया।
इन घटनाओं को मैंने अपने कैमरे में रिकॉर्ड किया है। रिकॉर्डिंग में गतिविधियों का समय और स्थान देखा जा सकता है। मैं उसकी प्रति पुलिस को उपलब्ध कराने और आवश्यक जानकारी देने को तैयार हूँ। इन तथ्यों से मुझे संदेह हुआ है, किंतु वास्तविक स्थिति का पता उचित जाँच से ही चलेगा।
आपसे अनुरोध है कि संबंधित थाने को गोपनीय और निष्पक्ष जाँच के निर्देश दें। मकान में रह रहे व्यक्तियों का किरायेदार सत्यापन कराया जाए तथा रात्रिकालीन गश्त बढ़ाई जाए। आवश्यक होने पर उपलब्ध रिकॉर्डिंग का परीक्षण कर उचित कार्रवाई की जाए। कृपया शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखने का भी ध्यान रखें, ताकि निवासी निर्भय होकर सहयोग कर सकें।
आपकी समयोचित कार्रवाई से मोहल्ले में सुरक्षा और विश्वास का वातावरण बनेगा।
धन्यवाद।
भवदीय
अमित कुमार
शांति विहार निवासी

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में संदेह के ठोस आधार, कैमरे में उपलब्ध साक्ष्य और निष्पक्ष जाँच तथा सुरक्षा बढ़ाने का अनुरोध औपचारिक ढंग से दिया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायती पत्र में घटनाओं का विवरण दें, साक्ष्य का उल्लेख करें और जाँच माँगें; संदेह को सिद्ध अपराध के रूप में न लिखें।

अथवा

4(OR). यातायात नियमों की अनदेखी करना कुछ युवकों का शौक बनता जा रहा है, जिससे नियम-पालन करने वाले नागरिकों को असुविधा होती है । इस मुद्दे की चर्चा करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र लिखकर सार्वजनिक समस्या की ओर प्रशासन और पाठकों का ध्यान आकर्षित किया जाता है।
- पत्र में तथ्यपरक समस्या, नागरिकों पर प्रभाव और व्यावहारिक समाधान विनम्र भाषा में प्रस्तुत होते हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप प्रेषक का पता, तिथि, संपादक का पद एवं समाचार-पत्र का पता लिखना चाहिए। इसके बाद विषय, संबोधन,

मुख्य कथ्य और अंत में प्रेषक का नाम आता है। विषय संक्षिप्त हो और पत्र के उद्देश्य को स्पष्ट करे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना युवकों द्वारा लालबत्ती पार करने, तेज गति से वाहन चलाने और गलत दिशा में जाने जैसी प्रवृत्तियों का उल्लेख करें। नियमों का पालन करने वालों की सुरक्षा, पैदल यात्रियों की कठिनाई और दुर्घटनाओं की आशंका समझाएँ। अंत में निगरानी, नियमसम्मत कार्रवाई और जागरूकता के सुझाव दें।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 25, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में,
संपादक महोदय
हिंदुस्तान
नई दिल्ली
विषय: युवकों द्वारा यातायात नियमों की अनदेखी की समस्या
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन और नागरिकों का ध्यान कुछ युवकों द्वारा यातायात नियमों की लगातार अनदेखी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। तेज गति से वाहन चलाना, लालबत्ती पार करना, गलत दिशा में चलना और अनावश्यक हॉर्न बजाना उनके लिए मानो मनोरंजन बन गया है।

इस व्यवहार से नियमों का पालन करने वाले नागरिक भी असुरक्षित हो जाते हैं। पैदल यात्रियों, बच्चों और बुजुर्गों को सड़क पार करने में कठिनाई होती है। अचानक कट मारने और सड़क पर करतब दिखाने से दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ती है। जाम तथा शोर से लोगों का समय और मानसिक शांति भी प्रभावित होती है।

यातायात पुलिस को व्यस्त चौराहों पर निगरानी बढ़ाकर उल्लंघन करने वालों पर नियमानुसार कार्रवाई करनी चाहिए। विद्यालयों और महाविद्यालयों में सड़क-सुरक्षा कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। अभिभावक भी बच्चों को जिम्मेदार वाहन-चालन की सीख दें।

कृपया इस समस्या को अपने समाचार-पत्र में स्थान दें, ताकि सुरक्षित यातायात के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी विकसित हो।
भवदीय
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में यातायात नियमों की अवहेलना से उत्पन्न सार्वजनिक असुविधा बताकर निगरानी, नियमों के पालन और जागरूकता की माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय शिकायत के साथ ठोस समाधान दें और व्यक्तिगत आरोपों से बचें।

5(क). संचार प्रक्रिया में फीडबैक किसे कहते हैं और इसका क्या महत्त्व है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीडबैक संचार प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया है।
- इसके माध्यम से प्रेषक संदेश की समझ और प्रभाव का आकलन करता है।

चरण 1: फीडबैक की पहचान प्रेषक का संदेश प्राप्त करने के बाद प्राप्तकर्ता जो उत्तर या प्रतिक्रिया देता है, उसे फीडबैक कहते हैं। यह मौखिक उत्तर, लिखित प्रतिक्रिया अथवा हावभाव के रूप में हो सकता है।

चरण 2: महत्त्व स्पष्ट करना फीडबैक से पता चलता है कि संदेश ठीक प्रकार से पहुँचा और समझा गया या नहीं। इससे प्रेषक गलतफहमी दूर कर सकता है और आगे के संचार को अधिक प्रभावी बना सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष फीडबैक प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया है; यह संदेश की समझ की पुष्टि करके संचार को प्रभावी बनाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया और महत्त्व में संदेश की समझ की पुष्टि अवश्य लिखें।

5(ख). समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का आधार किसी घटना या विषय की तथ्यपूर्ण सूचना है।
- नवीनता और सार्वजनिक रुचि समाचार के महत्त्वपूर्ण गुण हैं।

चरण 1: सूचना का स्वरूप समाचार किसी नवीन घटना, विचार या समस्या की तथ्यपरक सूचना है, जिसमें लोगों की रुचि हो और जो जनसंचार माध्यम से लोगों तक पहुँचाई जाए।

चरण 2: मुख्य गुण पहचानना इसमें सूचना की सत्यता और नवीनता आवश्यक हैं। केवल निजी अनुमान या मनगढ़ंत विवरण समाचार नहीं बनता। घटना का लोगों के जीवन से संबंध उसकी समाचारगत उपयोगिता बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष नवीन, सत्य और जनरुचि से जुड़ी घटना या विषय की तथ्यपूर्ण सूचना समाचार कहलाती है।

त्वरित सुझाव: समाचार की परिभाषा में नवीनता, तथ्यात्मकता और जनरुचि को एक साथ जोड़ें।

5(ग). इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारणों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट सूचना और संचार का त्वरित माध्यम है।
- इसमें पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो एक ही मंच पर उपलब्ध होते हैं।

चरण 1: पहला कारण: त्वरित उपलब्धता इंटरनेट पर देश-विदेश की सूचनाएँ बहुत तेजी से उपलब्ध हो जाती हैं। उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता की जानकारी किसी भी समय खोज सकता है और दूर स्थित व्यक्ति से तुरंत संपर्क कर सकता है।

चरण 2: दूसरा कारण: बहुमाध्यमीय और सहभागितापूर्ण स्वरूप इंटरनेट पर पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो के रूप में सामग्री मिलती है। उपयोगकर्ता सामग्री पढ़ने या देखने के साथ अपनी प्रतिक्रिया भी दे सकता है। यह सुविधा उसे आकर्षक और उपयोगी बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारण हैं: सूचनाओं की त्वरित उपलब्धता और पाठ, चित्र, ध्वनि तथा वीडियो के साथ सहभागिता की सुविधा।

त्वरित सुझाव: दो कारण अलग-अलग लिखें: एक सूचना की गति से और दूसरा माध्यम की सुविधाओं से संबंधित रखें।

5(घ). किसी समाचार की प्रस्तुति में जनरुचि का क्या महत्त्व है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनरुचि से आशय पाठकों और दर्शकों की रुचियों तथा आवश्यकताओं से है।
- समाचार की प्रस्तुति पाठक से उसके संबंध को स्पष्ट करती है।

चरण 1: जनरुचि का संबंध जिस समाचार का संबंध लोगों के जीवन, आवश्यकताओं या जिज्ञासाओं से होता है, उसे वे अधिक ध्यान से पढ़ते या देखते हैं। इसलिए प्रस्तुति में उसके जनसंबंधी पक्ष को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 2: प्रस्तुति पर प्रभाव जनरुचि समाचार के चयन, शीर्षक, क्रम और विस्तार को प्रभावित करती है। समाचार को सरल और प्रासंगिक ढंग से प्रस्तुत करने से उसकी पहुँच बढ़ती है। किंतु रुचि बढ़ाने के लिए तथ्यों को बदलना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जनरुचि समाचार को पाठकों के लिए प्रासंगिक और आकर्षक बनाती है तथा उसके चयन और प्रस्तुति को दिशा देती है।

त्वरित सुझाव: जनरुचि का महत्त्व बताते समय समाचार के चयन और पाठक की दिलचस्पी का संबंध स्पष्ट करें।

5(ङ). संपादन में वस्तुपरकता से क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वस्तुपरकता का अर्थ तथ्य के आधार पर निष्पक्ष प्रस्तुति है।
- संपादक की निजी पसंद और पूर्वाग्रह समाचार को प्रभावित नहीं करने चाहिए।

चरण 1: अर्थ स्पष्ट करना संपादन में वस्तुपरकता से तात्पर्य समाचार को सत्यापित तथ्यों के आधार पर निष्पक्ष ढंग से प्रस्तुत करना है। संपादक को अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं, पसंद या विरोध को तथ्य के रूप में नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 2: व्यवहार में प्रयोग विवादास्पद विषय में संबंधित पक्षों के तथ्यपूर्ण कथनों को उचित स्थान देना चाहिए। आरोप को प्रमाणित तथ्य की तरह प्रस्तुत न किया जाए। भाषा संतुलित रखने और अनावश्यक विशेषण हटाने से समाचार की विश्वसनीयता बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुपरकता का अर्थ निजी पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सत्यापित तथ्यों के आधार पर समाचार का निष्पक्ष संपादन करना है।

त्वरित सुझाव: वस्तुपरकता समझाते समय तथ्य और निजी राय का अंतर दिखाएँ तथा निष्पक्षता का उल्लेख करें।

6. 'मेट्रो रेल का सफ़र' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी विषय का सुव्यवस्थित विवेचन किया जाता है; शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, मुख्य विचार तथा निष्कर्ष आते हैं।
- इस विषय का केंद्र शहरी परिवहन, यात्री अनुभव और नागरिक अनुशासन है। वर्णन के साथ विचार और उदाहरण जोड़ने से आलेख प्रभावी बनता है।

चरण 1: आलेख का स्वरूप निर्धारित करें आलेख में विषय से जुड़ा आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम और सुव्यवस्थित अनुच्छेद होने चाहिए। आरंभ में मेट्रो के वातावरण का परिचय, मध्य में यात्रा की प्रक्रिया तथा सुविधाएँ और अंत में संतुलित विचार रखे जाएँगे। भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और तथ्यपरक रखी जाएगी।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ स्टेशन पर प्रवेश, सुरक्षा जाँच, टिकट लेना, प्लेटफ़ॉर्म का अनुशासन और डिब्बे का अनुभव क्रम से आएँगे। मेट्रो का समय, सुविधा और पर्यावरण से संबंध स्पष्ट करेंगे। भीड़, शिष्टाचार और विशेष आवश्यकता वाले यात्रियों की सुविधा का उल्लेख अनुभव को व्यापक बनाएगा।

चरण 3: पूर्ण नमूना आलेख मेट्रो रेल का सफ़र

लेखक : अजय कुमार

महानगर की सड़कों पर वाहनों का शोर और लंबे जाम दिखाई देते हैं। ऐसे में मेट्रो रेल का सफ़र एक सुखद अनुभव बन जाता है। स्टेशन पर प्रवेश करते ही व्यवस्थित परिसर, मार्ग बताने वाले संकेत और यात्रियों की गतिविधियाँ ध्यान खींचती हैं। सुरक्षा जाँच के बाद टिकट लेकर यात्री अपने गंतव्य के प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँचते हैं।

ट्रेन के आते ही दरवाज़ों के दोनों ओर कतार बनाना आवश्यक है। पहले उतरने वालों को रास्ता देना और फिर भीतर जाना यात्रा को सहज

बनाता है। डिब्बे में अगले स्टेशन की उद्घोषणा तथा मार्गसूचक संकेत नए यात्री का मार्गदर्शन करते हैं। वातानुकूलित वातावरण और सुचारु गति यात्रा की थकान कम करते हैं। खिड़की के बाहर कभी ऊँची इमारतें दिखती हैं तो कभी ट्रेन भूमिगत सुरंग में प्रवेश कर जाती है।

मेट्रो शहर के दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ती है और बड़ी संख्या में लोगों को सार्वजनिक परिवहन अपनाने का अवसर देती है। सड़क के जाम में फँसने की चिंता घटती है, जिससे विद्यालय, कार्यालय और अन्य कामों तक पहुँचना सुविधाजनक होता है। निजी वाहनों पर निर्भरता कम होने से यातायात और प्रदूषण का दबाव भी घट सकता है।

व्यस्त समय की भीड़ में हमारा व्यवहार विशेष महत्त्व रखता है। बुज़ुर्गों, दिव्यांगों और गर्भवती महिलाओं को बैठने का स्थान देना, अनावश्यक शोर न करना तथा सफ़ाई बनाए रखना प्रत्येक यात्री का दायित्व है। मेट्रो केवल आवागमन का साधन नहीं, साझे सार्वजनिक जीवन का अनुभव भी है। सुविधाओं के साथ जिम्मेदार नागरिक व्यवहार जुड़ जाए तो इसका हर सफ़र अधिक सुरक्षित और सुखद बन सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष मेट्रो की यात्रा का क्रम, उपयोगिता और यात्री के दायित्व समेटकर एक व्यवस्थित आलेख प्रस्तुत होता है।

त्वरित सुझाव: आलेख में स्टेशन से गंतव्य तक का अनुभव क्रम से लिखें और सुविधाओं के साथ नागरिक अनुशासन भी जोड़ें।

अथवा

6(OR). 'बदलते गाँव' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी विषय का सुव्यवस्थित विवेचन किया जाता है; शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, मुख्य विचार तथा निष्कर्ष आते हैं।
- इस विषय का केंद्र ग्रामीण जीवन में विकास और सामाजिक परिवर्तन है। वर्णन के साथ विचार और उदाहरण जोड़ने से आलेख प्रभावी बनता है।

चरण 1: आलेख का स्वरूप निर्धारित करें विषय को स्पष्ट करने वाला शीर्षक और लेखक का नाम दें। भूमिका में गाँव की बदलती तस्वीर रखें। मुख्य भाग में सड़क, शिक्षा, संचार, कृषि और सामाजिक जीवन के बदलाव समझाएँ। निष्कर्ष में विकास के साथ प्रकृति और सामुदायिक सहयोग बचाने की आवश्यकता व्यक्त करें।

चरण 2: संतुलित दृष्टिकोण की योजना बनाएँ परिवर्तन को केवल सुखद या केवल दुखद न कहें। सुविधाओं से मिलने वाले अवसरों के साथ रोजगार, पलायन और पर्यावरण की चुनौतियाँ भी बताएँ। सभी गाँवों की परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होतीं, इसलिए व्यापक दावों से बचते हुए ठोस उदाहरणों के आधार पर विचार रखें।

चरण 3: पूर्ण नमूना आलेख बदलते गाँव

लेखक : अजय कुमार

गाँव की कल्पना करते ही खेत, पगडंडियाँ और चौपाल की तस्वीर सामने आती है। आज इस तस्वीर में पक्की सड़कें, मोबाइल फ़ोन और नए विद्यालय भी जुड़ रहे हैं। परिवर्तन की गति हर क्षेत्र में समान नहीं है, फिर भी अनेक गाँवों का जीवन पहले से अलग दिखाई देता है।

सड़कों और परिवहन ने गाँवों को कस्बों तथा शहरों से जोड़ा है। बाज़ार, अस्पताल और शिक्षण संस्थानों तक पहुँचना आसान हुआ है। बिजली और संचार की सुविधाएँ बढ़ने से सूचना का दायरा विस्तृत हुआ है। मोबाइल के माध्यम से लोग दूर रहने वाले परिवारजनों से जुड़े रहते हैं। विद्यार्थियों को अध्ययन की नई सामग्री मिलती है और किसान मौसम तथा बाज़ार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

खेती में मशीनों के प्रयोग ने श्रम और समय बचाया है। शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है और लड़कियाँ भी आगे पढ़ने तथा काम करने की आकांक्षा रखती हैं। स्वयं सहायता समूहों और छोटे उद्यमों ने कुछ परिवारों के लिए आय के नए रास्ते खोले हैं। ये बदलाव ग्रामीण समाज की सक्रियता और उम्मीद का संकेत हैं।

परंतु चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। पर्याप्त स्थानीय रोजगार के अभाव में युवाओं को शहर जाना पड़ता है। अनेक स्थानों पर जलस्रोतों की उपेक्षा, रासायनिक पदार्थों का असंतुलित उपयोग और कचरा नई समस्याएँ पैदा कर रहे हैं। आपसी मेलजोल तथा लोकपरंपराओं को भी

बदलती जीवनशैली प्रभावित करती है।

गाँवों का विकास तभी सार्थक होगा जब शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर सब तक पहुँचें। तकनीक के साथ जल, भूमि और हरियाली की रक्षा भी आवश्यक है। आधुनिक सुविधाओं और सामुदायिक सहयोग का मेल ही बदलते गाँवों को समृद्ध तथा जीवंत बना सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष गाँवों के परिवर्तन को सुविधाओं, नए अवसरों और शेष चुनौतियों सहित प्रस्तुत करने से आलेख संतुलित बनता है।

त्वरित सुझाव: बदलते गाँवों पर लिखते समय हर सुविधा का जीवन पर प्रभाव बताएँ और निष्कर्ष में विकास की दिशा सुझाएँ।

---

7. 'विलुप्त होती गौरैया' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी विषय के मानवीय और सामाजिक पक्ष को रोचक, चित्रात्मक भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।
- आकर्षक शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ, कारणों की विवेचना और सार्थक समापन फ़ीचर को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति शीर्षक के बाद लेखक का नाम दें। आरंभ में आँगन में गौरैया की अनुपस्थिति का दृश्य रखकर पाठक को विषय से जोड़ें। मुख्य भाग में उसके घटने के कारण और संरक्षण के उपाय आएँ। भाषा संवेदनशील हो, पर अप्रमाणित आँकड़े और काल्पनिक शोध न जोड़ें।

चरण 2: विषय का विकास घरों के बदलते स्वरूप, घोंसले के लिए जगह की कमी, भोजन और पानी की उपलब्धता तथा कीटनाशकों के प्रभाव को जोड़ें। अंत में पाठक को छोटे, व्यावहारिक प्रयासों के लिए प्रेरित करें। प्रश्न में निश्चित शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए विषय का पर्याप्त विस्तार किया जा सकता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फ़ीचर चहचहाहट की राह देखता आँगन

लेखक : अमन

सुबह हुई, खिड़की खुली, पर वह परिचित चूँ-चूँ सुनाई नहीं दी। कभी आँगन में फुदकती गौरैया घर की अपनी सदस्य लगती थी। आज चमकती इमारतों के बीच उसकी छोटी-सी उपस्थिति भी दुर्लभ होती जा रही है। क्या हमारी तरक्की में उसके लिए कोई कोना नहीं बचा?

पुराने घरों की छतों और दीवारों के झरोखे उसे घोंसला बनाने की जगह देते थे। खुले आँगन में बिखरे दाने उसका भोजन थे। अब बंद मकानों और पक्के परिसरों में ये सुविधाएँ घट गई हैं। आसपास की हरियाली कम होने तथा कीटनाशकों के प्रयोग से छोटे कीड़ों की उपलब्धता भी प्रभावित होती है। नन्हे बच्चों को पालती चिड़िया के लिए भोजन जुटाना कठिन हो जाता है।

गौरैया का जाना केवल एक पक्षी का ओझल होना नहीं है; यह हमारे परिवेश के बदलने की सूचना भी है। जिस घर में कभी बच्चे उसकी उड़ान देखकर खुश होते थे, वहाँ अब वे उसे तस्वीरों में पहचानते हैं। उसकी वापसी के लिए बड़ी घोषणाओं से अधिक छोटे प्रयास जरूरी हैं।

हम सुरक्षित जगह पर घोंसले के लिए उपयुक्त डिब्बा लगा सकते हैं। साफ पानी का उथला पात्र रखें और उसे नियमित साफ करें। थोड़े दाने ऐसी जगह डालें जहाँ पक्षी सुरक्षित हों। स्थानीय पेड़-पौधे लगाएँ और कीटनाशकों का अनावश्यक इस्तेमाल घटाएँ। पड़ोस और विद्यालय भी इस प्रयास में साथ आ सकते हैं।

आइए, अपने घरों के साथ अपने मन में भी गौरैया के लिए जगह बनाएँ। शायद किसी सुबह खिड़की खोलते ही फिर वही चहचहाहट हमारा स्वागत करे।

चरण 4: निष्कर्ष यह फ़ीचर गौरैया की घटती उपस्थिति को जीवन के एक परिचित दृश्य से जोड़ते हुए उसके संरक्षण में नागरिक भागीदारी का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी छोटे दृश्य से करें और अंत में पाठक को करने योग्य उपाय अवश्य दें।

अथवा

7(OR). 'काम पर जाते बच्चे' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में तथ्यपरक विवेचना के साथ मानवीय संवेदना और दृश्यात्मक प्रस्तुति रहती है।
- बालश्रम के विषय में बच्चे की पीड़ा, शिक्षा से दूरी, सामाजिक कारण और सुधार के उपाय जुड़े होने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। आरंभ में काम करते बच्चे का दृश्य हो। फिर गरीबी, सस्ती मजदूरी की माँग और शिक्षा से वंचित रहने की समस्या समझाएँ। अंत में परिवार, समाज और प्रशासन की जिम्मेदारी दिखाएँ।

चरण 2: भाषा और दृष्टिकोण बच्चे को दया की वस्तु बनाकर छोड़ने के बजाय उसके अधिकार और संभावनाएँ सामने रखें। काल्पनिक आँकड़े या किसी वास्तविक संस्था के नाम से गढ़ा हुआ बयान न दें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है, इसलिए पर्याप्त विस्तार वाला फ़ीचर लिखा जा सकता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फ़ीचर बस्ते की जगह बर्तनों का बोझ

लेखक : अमन

सुबह की सड़क पर बच्चे विद्यालय जा रहे हैं। उनके कंधों पर बस्ते हैं और आँखों में दिन भर की उत्सुकता। उसी सड़क के किनारे चाय की दुकान पर एक बच्चा गिलास धो रहा है। घंटी उसके लिए भी बजती है, पर वह विद्यालय की नहीं, ग्राहक की पुकार है।

यह दृश्य हमारे आसपास बार-बार दिखाई देता है। कोई बच्चा ढाबे पर बर्तन माँजता है, कोई कूड़ा बीनता है, तो कोई दुकान पर सामान उठाता है। जिस उम्र में उसे पढ़ना, खेलना और अपनी रुचियाँ पहचानना चाहिए, उस उम्र में वह परिवार की जरूरतों और मालिक के आदेशों के बीच घिर जाता है। काम की थकान उसके बचपन की सहजता छीन लेती है।

गरीबी और परिवार की असुरक्षा बच्चों को काम की ओर धकेलती हैं। दूसरी ओर सस्ते श्रम की माँग तथा समाज की उदासीनता इस स्थिति को बनाए रखती हैं। पढ़ाई छूटने से भविष्य में बेहतर आजीविका पाने के अवसर भी घटते हैं। इस तरह अभाव का चक्र अगली पीढ़ी तक पहुँच सकता है।

समाधान केवल बच्चे को काम से हटा देना नहीं है। उसके परिवार को सहारा, सुरक्षित वातावरण और शिक्षा तक वास्तविक पहुँच भी चाहिए। विद्यालय में ऐसा स्वागतपूर्ण माहौल हो जहाँ वह बिना अपमान के सीख सके। आर्थिक सहायता और सामाजिक सहयोग परिवार की विवशता कम कर सकते हैं।

नागरिक बच्चों से काम न कराएँ और शोषण दिखाई देने पर संबंधित व्यवस्था तक सूचना पहुँचाएँ। समाज को यह स्वीकार करना होगा कि बच्चे का स्थान जोखिम भरे कार्यस्थल पर नहीं, सीखने और खेलने की दुनिया में है। जिस दिन उसके हाथ में गंदे गिलास की जगह किताब होगी, उस दिन हमारी प्रगति का अर्थ अधिक मानवीय होगा।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर बालश्रम के दृश्य से शुरू होकर उसके कारण, दुष्परिणाम और शिक्षा तथा सामाजिक सहयोग पर आधारित समाधान प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: बालश्रम पर फ़ीचर में मार्मिक दृश्य के साथ कारण और ठोस समाधान जोड़ें; केवल नारे न लिखें।

8. मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ । [8 अंक]

8(क). शीतल वाणी में आग का क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में विरोधी शब्दों का मेल कवि के भीतर के जटिल भावों को व्यक्त कर सकता है।
- यहाँ शीतल वाणी बाहरी संयम और मधुरता का, जबकि आग प्रेमहीन संसार और सामाजिक व्यवस्था के प्रति भीतर के असंतोष तथा विद्रोह का संकेत है।

चरण 1: शीतल वाणी का अर्थ कवि की वाणी शांत, मधुर और संयत है। वह अपना दुख कठोर या कटु अभिव्यक्ति में नहीं बदलता। उसकी कविता सुनने वाले को शीतलता देती है, इसलिए उसकी वाणी को शीतल कहा गया है।

चरण 2: आग का तात्पर्य आग प्रेमहीन संसार और संवेदनाशून्य सामाजिक व्यवस्था के प्रति कवि के असंतोष एवं विद्रोह का प्रतीक है। कवि मधुर, शांत स्वर में बोलता है, किंतु उसकी वाणी में इस संसार के प्रति तीखा विरोध छिपा रहता है। जीवन की निजी पीड़ा और विरह इस तीव्रता को गहराते हैं, पर आग का आशय केवल व्यक्तिगत दुख नहीं है। पिछली पंक्ति में रोदन के साथ राग का मेल भी दिखाता है कि वेदना और मधुर अभिव्यक्ति उसके व्यक्तित्व में साथ हैं। इसी तरह शीतलता के भीतर विद्रोह की ऊष्मा उपस्थित है।

चरण 3: निष्कर्ष 'शीतल वाणी में आग' का तात्पर्य है कि कवि अपनी मधुर और संयत वाणी में प्रेमहीन संसार के प्रति असंतोष, विरोध और विद्रोह की तीव्र भावना व्यक्त करता है। उसकी भीतरी वेदना इस भाव को और गहरा बनाती है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विरोधी पदों का अर्थ बताते समय बाहरी अभिव्यक्ति और भीतरी अनुभूति का संबंध स्पष्ट करें।

8(ख). कवि ने खंडहर का भाग किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि बाहरी वैभव से अधिक अपने अंतर्मन की संवेदना और अनुभवों को महत्त्व देता है।
- खंडहर और प्रासाद का विरोध निजी दुख की भाव-संपदा तथा सांसारिक ऐश्वर्य के बीच अंतर खोलता है।

चरण 1: खंडहर के संकेत को पहचानना कवि ने अपने दुखों से आहत जीवन और टूटे हुए हृदय को खंडहर का भाग कहा है। जैसे खंडहर बीते जीवन और टूटे वैभव की स्मृतियाँ सँजोता है, वैसे ही कवि का अंतर्मन विछोह, पीड़ा और टूटे स्वप्नों के अनुभव सँजोए हुए है। यह पत्थरों के किसी वास्तविक भवन का विवरण नहीं है।

चरण 2: कवि के मूल्य-बोध को समझना इन दुखद अनुभवों में भी कवि के लिए अनमोल आत्मीयता और भाव-संपदा है। इसलिए वह उन्हें राजाओं के महलों से भी अधिक मूल्यवान मानता है। भूपों के प्रासाद निछावर होने का कथन इसी आंतरिक गरिमा को उभारता है। कवि बाहरी संपन्नता के स्थान पर अपने अनुभूत जीवन को स्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष खंडहर का भाग कवि का दुखों और टूटे स्वप्नों से भरा जीवन है। उसकी स्मृतियों और संवेदनाओं का मूल्य इतना अधिक है कि राजसी महलों का वैभव भी उसके सामने तुच्छ लगता है।

त्वरित सुझाव: खंडहर का केवल नाश के रूप में अर्थ न दें; उसके भीतर सँजोई स्मृतियों और कवि के आत्मीय मूल्य को भी बताएँ।

8(ग). राजमहल न्यौछावर होने से क्या आशय है और वे किस पर न्यौछावर होते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ प्रसंग के अनुसार ग्रहण किया जाता है।
- कवि भौतिक वैभव से अधिक प्रेम और संवेदना को महत्त्व देता है।

चरण 1: न्यौछावर होने का आशय राजमहलों के न्यौछावर होने का आशय है कि राजाओं का अपार वैभव भी कवि के आंतरिक जीवन के सामने तुच्छ हो जाता है। यहाँ वास्तविक महल दान करने की घटना नहीं, बल्कि दो जीवन-मूल्यों की तुलना व्यक्त हुई है।

चरण 2: न्यौछावर होने का आधार राजमहल कवि के हृदय रूपी खंडहर पर न्यौछावर होते हैं। यह हृदय प्रेम की पीड़ा और अभाव से भरा है, फिर भी उसमें मानवीय संवेदना और आत्मिक समृद्धि है। कवि का यही प्रेममय अनुभव राजसी सुख-संपत्ति से अधिक मूल्यवान है। यहाँ खंडहर प्रेम में टूटे हुए मन का प्रतीक है। उसका बाहरी अभाव उसके भीतर सुरक्षित स्नेह को कम नहीं करता। इसी कारण कवि धन-संपत्ति की अपेक्षा हृदय के इस अनुभव को वरीयता देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के प्रेम और पीड़ा से संपन्न हृदय रूपी खंडहर के सामने राजमहलों का वैभव तुच्छ है; उसी पर उनके न्यौछावर होने की बात कही गई है।

त्वरित सुझाव: न्यौछावर का अर्थ बताते हुए भौतिक वैभव और हृदय की संवेदना की तुलना अवश्य स्पष्ट करें।

8(घ). 'मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है' – यह बात कवि ने कैसे समझाई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विरोधी भावों का एक साथ उपस्थित होना कवि के व्यक्तित्व की विशेषता है।
- काव्यांश में रोदन-राग, शीतलता-आग और प्रासाद-खंडहर के युग्म आए हैं।

चरण 1: दुःख और संगीत का मेल कवि अपने रोदन में भी राग लिए फिरता है। उसके जीवन में दुःख और वेदना हैं, पर वे उसकी संगीतात्मक अभिव्यक्ति और आनंद की क्षमता को समाप्त नहीं करते। इस प्रकार रोने और गाने जैसे विपरीत भाव एक साथ मौजूद हैं।

चरण 2: शांति, आक्रोश और मूल्य का मेल उसकी वाणी ऊपर से शीतल है, किंतु भीतर आग अर्थात तीव्र अनुभूति और विद्रोह भी है। वह अपने हृदय को खंडहर कहता है, फिर भी उसे इतना मूल्यवान मानता है कि राजमहल उस पर न्यौछावर हों। इन विरोधी स्थितियों का सह-अस्तित्व उसके जीवन को विरोधों का सामंजस्य बनाता है। इन उदाहरणों में विपरीत भाव एक-दूसरे को मिटाते नहीं, बल्कि कवि के अनुभव को अधिक व्यापक बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रोदन में राग, शीतल वाणी में आग तथा खंडहर में राजमहलों से अधिक मूल्य दिखाकर कवि ने अपने जीवन में विरुद्ध भावों का सामंजस्य समझाया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल विरोधी शब्द न गिनाएँ; हर युग्म के भीतर साथ रहने वाले भाव भी बताएँ।

अथवा

8. अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल ?
त्रस्त नयन मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर! [8 अंक]

8(क). कौन लोग विलासिता में डूबे हुए हैं ? वे क्यों भयभीत हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल यहाँ परिवर्तन और क्रांति के प्रतीक हैं।
- धनी वर्ग का भय उसके वैभवपूर्ण जीवन पर संकट से जुड़ा है।

चरण 1: विलासिता में डूबे लोगों की पहचान काव्यांश में धनी और संपन्न लोग विलासिता में डूबे हुए हैं। वे अपनी स्त्रियों के अंगों से लिपटे हुए हैं। यह चित्र उनकी भोग-सुख में लीन जीवनचर्या और संपत्ति से प्राप्त सुविधाओं को व्यक्त करता है।

चरण 2: भयभीत होने का कारण बादल की वज्र जैसी गर्जना उन्हें क्रांति की चेतावनी लगती है। उन्हें आशंका है कि सामाजिक परिवर्तन से उनका संचित वैभव और शोषण पर आधारित प्रभुत्व नष्ट हो सकता है। इसलिए सुख-सुविधाओं के बीच भी वे काँप रहे हैं और भयभीत होकर अपना मुख ढाँप रहे हैं। बादल की आवाज से उनका काँपना दिखाता है कि विलासिता उन्हें सच्ची निर्भयता नहीं दे सकी। शोषण से अर्जित सुख के खो जाने की आशंका उनके भीतर लगातार बनी हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष विलासिता में डूबे धनी लोग बादलों की क्रांतिकारी गर्जना से भयभीत हैं, क्योंकि उससे उनके धन और शोषक प्रभुत्व के समाप्त होने का संकेत मिलता है।

त्वरित सुझाव: पहले धनी वर्ग की पहचान दें, फिर बादल की गर्जना को क्रांति से जोड़कर उसके भय का कारण समझाएँ।

8(ख). 'विप्लव के वीर' किसे कहा गया है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में बादल प्राकृतिक वर्षा के साथ सामाजिक क्रांति का संकेत भी देते हैं।
- किसान की पुकार बादल को पीड़ित वर्ग की आशा से जोड़ती है।

चरण 1: संबोधन की पहचान कवि ने बादल को विप्लव के वीर कहा है। किसान उसी को अधीर होकर पुकारता है। यहाँ विप्लव का अर्थ क्रांति या व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन है और वीर संबोधन बादल की शक्तिशाली, परिवर्तनकारी भूमिका को प्रकट करता है।

चरण 2: संबोधन की सार्थकता बादल की प्रचंड गर्जना संपन्न शोषक वर्ग को भयभीत करती है। दूसरी ओर उसकी वर्षा कृषक के खेतों को जीवन देती है और अन्न पैदा होने की संभावना जगाती है। वह धनी वर्ग के आतंक और किसान की आशा, दोनों का केंद्र बनता है; इसलिए उसे अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने वाले क्रांति-वीर के रूप में संबोधित किया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को विप्लव के वीर कहा गया है, क्योंकि वह शोषकों को भयभीत करने और पीड़ित किसान के जीवन में नई आशा तथा परिवर्तन लाने वाली शक्ति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: वीर संबोधन का कारण बताते समय धनी का भय और किसान की आशा, दोनों को साथ रखें।

8(ग). किसान की दशा कैसी हो गई है ? इसका कारण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीर्ण और शीर्ण शब्द शारीरिक दुर्बलता का चित्र खींचते हैं।
- किसान की गरीबी को उसके श्रम और शोषण के सामाजिक संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: किसान की दशा किसान की बाँहें जीर्ण और शरीर शीर्ण हो गया है। वह अत्यंत कमजोर, दुबला और थका हुआ है। निरंतर श्रम करने पर भी उसे पर्याप्त पोषण और सुख नहीं मिला है। उसका क्षीण शरीर उसकी निर्धनता तथा जीवन के कठिन संघर्ष को प्रत्यक्ष करता है।

चरण 2: दशा का कारण उसकी इस दुर्दशा का कारण संपन्न वर्ग द्वारा किया गया शोषण और आर्थिक अभाव है। वह परिश्रम करता है, पर उसके श्रम का पूरा फल उसे नहीं मिलता। खेती वर्षा पर निर्भर होने के कारण उसकी जीविका भी अनिश्चित रहती है। इसीलिए वह परिवर्तन और जीवनदायिनी वर्षा की आशा से बादल को पुकार रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान का शरीर दुर्बल और जर्जर हो गया है; निरंतर परिश्रम के बावजूद शोषण, निर्धनता और पर्याप्त पोषण के अभाव ने उसे ऐसी दशा में पहुँचा दिया है।

त्वरित सुझाव: जीर्ण बाहु और शीर्ण शरीर का अर्थ लिखने के बाद उसके पीछे के शोषण और अभाव को स्पष्ट करें।

8(घ). बादलों को बुलाने में किसान की अधीरता का कारण स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल की वर्षा खेती के लिए जीवनदायिनी है।
- विप्लव का प्रतीक बादल किसान के लिए शोषण से मुक्ति की आशा भी है।

चरण 1: खेती के लिए वर्षा की आवश्यकता किसान का जीवन खेती से जुड़ा है और फसल के लिए पानी आवश्यक है। वर्षा आने पर खेतों में हरियाली और अन्न की संभावना पैदा होगी। अपनी गरीबी तथा कमजोर शरीर के कारण वह अधिक देर तक अभाव सहने की स्थिति में नहीं है, इसलिए बादल को शीघ्र आने के लिए पुकारता है।

चरण 2: परिवर्तन की उत्कट आकांक्षा किसान बादल में विप्लव का वीर भी देखता है। वह चाहता है कि शोषणकारी व्यवस्था बदले और उसके श्रम को उचित फल मिले। उसकी पुकार केवल पानी के लिए नहीं, बल्कि दयनीय जीवन से मुक्ति तथा नई आशा के लिए भी है। यही तत्काल राहत और परिवर्तन की आवश्यकता उसकी अधीरता का कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान वर्षा से फसल और जीविका मिलने तथा क्रांति से शोषण समाप्त होने की आशा करता है। अपनी जर्जर दशा में राहत की तीव्र आवश्यकता के कारण वह बादल को अधीर होकर बुलाता है।

त्वरित सुझाव: अधीरता का कारण दो स्तरों पर लिखें: खेतों के लिए वर्षा और किसान के जीवन में न्यायपूर्ण परिवर्तन।

9. छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया । [6 अंक]

9(क). खेत और काग़ज़ की तुलना का आधार स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने खेती की प्रक्रिया के माध्यम से कविता की रचना समझाई है।
- कागज और खेत दोनों सृजन के आधार हैं; तुलना आकार और कार्य दोनों पर टिकी है।

चरण 1: आकार की समानता कवि का कागज का पन्ना चौकोना है और वह उसे अपना छोटा खेत कहता है। खेत जिस प्रकार बीज बोने का स्थान होता है, उसी प्रकार कागज वह आधार है जिस पर कवि अपने अनुभव और भाव अंकित करता है। आकार की समानता इस तुलना का प्रारंभिक आधार है।

चरण 2: सृजन की समानता खेत में बीज पड़ने से पौधा और अंततः फसल उत्पन्न होती है। कागज पर किसी क्षण की अनुभूति का बीज पड़ता है, जो कल्पना और अभिव्यक्ति से कविता का रूप लेता है। अतः दोनों में बीज से नई सृष्टि होने की समान प्रक्रिया है। खेत अन्न की उपज देता है और कागज पर रची कविता भावों का आस्वाद प्रदान करती है।

चरण 3: निष्कर्ष खेत और कागज की तुलना उनके चौकोने आकार तथा सृजन के आधार होने पर की गई है: खेत में बीज से फसल उगती है और कागज पर अनुभूति से कविता जन्म लेती है।

त्वरित सुझाव: आकार की समानता के साथ बीज से फसल और अनुभूति से कविता बनने की प्रक्रिया अवश्य जोड़ें।

9(ख). अंधड़ और बीज का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकार्थ।
- कविता में खेती की प्रक्रिया के माध्यम से रचना की प्रक्रिया समझाई गई है।

चरण 1: अंधड़ का आशय 'अंधड़' कवि के मन में अचानक उठने वाले भावों, अनुभूतियों और विचारों के तीव्र आवेग का प्रतीक है। जैसे वास्तविक अंधड़ वातावरण को झकझोर देता है, वैसे ही कोई अनुभव कवि के अंतर्मन को उद्वेलित करके उसे रचना के लिए प्रेरित करता है। यहाँ इसका अर्थ केवल प्राकृतिक आँधी नहीं है।

चरण 2: बीज का आशय 'बीज' उस क्षण में जन्मे रचना के मूल भाव या विचार का प्रतीक है। यही छोटा-सा भाव कल्पना और साधना का पोषण पाकर पूर्ण कविता के रूप में विकसित होता है। इस प्रकार भावों का आवेग प्रेरक शक्ति और बीज सृजन का आरंभिक तत्त्व है। काग़ज़ रूपी खेत में यही भाव-बीज बोया जाता है। इस रूपक में बाहरी अनुभव और भीतर की अनुभूति का संबंध उभरता है; केवल घटना घट जाना पर्याप्त नहीं, उसका कवि के मन को प्रभावित करना भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ भावात्मक आवेग का तथा बीज कविता के मूल भाव या विचार का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकों को अलग-अलग समझाते समय अंधड़ को प्रेरणा और बीज को रचना के मूल भाव से जोड़िए।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषताएँ।
- काव्यभाषा में सरल शब्द भी प्रतीक और चित्र के माध्यम से व्यापक अर्थ व्यक्त कर सकते हैं।

चरण 1: सरल और सहज शब्दावली काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट है। 'खेत', 'काग़ज़', 'पन्ना' और 'बीज' जैसे परिचित शब्द पाठक के सामने स्पष्ट चित्र उपस्थित करते हैं। छोटे वाक्यों और स्वाभाविक पदक्रम के कारण भाव आसानी से समझ में आता है।

चरण 2: बिंबात्मक और प्रतीकात्मक भाषा भाषा की दूसरी विशेषता उसकी बिंबात्मक एवं प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। 'खेत चौकोना' और 'काग़ज़ का एक पन्ना' दृश्य बिंब बनाते हैं। खेत, अंधड़ और बीज के माध्यम से कविता की सृजन-प्रक्रिया व्यक्त होती है। इसलिए साधारण खेती का चित्र गहरे रचनात्मक अर्थ से भर जाता है। इन शब्दों की विशेषता यह है कि वे कठिन अमूर्त विचार को मूर्त रूप देते हैं। पाठक पहले खेत और बीज का परिचित दृश्य देखता है, फिर उसी के सहारे कविता के जन्म की सूक्ष्म प्रक्रिया समझ लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल-सहज तथा बिंबात्मक-प्रतीकात्मक है।

त्वरित सुझाव: हर भाषिक विशेषता के साथ काव्यांश से उसका छोटा उदाहरण अवश्य जोड़िए।

अथवा

9. आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पर ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है । [6 अंक]

9(क). काव्यांश की भाषा की लाक्षणिकता और लोकतत्त्व पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लाक्षणिकता और लोकतत्त्व।
- लोकजीवन के परिचित प्रसंग और संकेतपूर्ण अभिव्यक्ति मिलकर काव्य के भाव को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: लाक्षणिक अभिव्यक्ति 'आईने में चाँद उतर आया है' में चंद्रमा के सचमुच दर्पण में आने का अर्थ नहीं है। यह दर्पण में दिखाई देने वाले चाँद के प्रतिबिंब की ओर संकेत करता है। माँ बच्चे की कल्पना के अनुरूप बोलकर उसे विश्वास दिलाती है कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है। इस तरह कथन में लाक्षणिकता आती है।

चरण 2: लोकजीवन का सहज चित्र आँगन में बच्चे का रूठना, चाँद पाने की ज़िद करना और माँ का उसे दर्पण दिखाकर बहलाना लोकजीवन का परिचित प्रसंग है। 'ठुनक', 'ज़िदयाया' और 'ललचाया' जैसे बोलचाल के शब्द घरेलू वातावरण को जीवंत बनाते हैं। इस सहज भाषा और मातृसुलभ उपाय में लोकतत्त्व प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष दर्पण में चाँद उतरने का संकेत लाक्षणिकता तथा माँ-बच्चे का घरेलू प्रसंग और लोकप्रचलित शब्द लोकतत्त्व प्रकट करते हैं।

त्वरित सुझाव: लाक्षणिकता के लिए प्रतिबिंब का संकेत और लोकतत्त्व के लिए घरेलू प्रसंग तथा शब्द चुनिए।

9(ख). यह किस छंद में लिखा गया है तथा उसका क्या लक्षण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- छंद की पहचान।
- छंद की पहचान में पंक्तियों की संख्या तथा तुकों का क्रम देखा जाता है।

चरण 1: छंद का नाम और संरचना यह काव्यांश 'रुबाई' छंद में लिखा गया है। रुबाई उर्दू-फ़ारसी काव्य की चार पंक्तियों वाली स्वतंत्र रचना होती है। इन चार पंक्तियों में कोई एक भाव या विचार संक्षेप में पूर्णता पाता है। प्रस्तुत अंश में बच्चे की ज़िद और माँ के उसे बहलाने का प्रसंग पूरा हो जाता है।

चरण 2: तुक-योजना का प्रमाण रुबाई की पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ तुकांत होती हैं; तीसरी सामान्यतः अलग तुक की होती है। यहाँ 'ज़िदयाया है', 'ललचाया है' और 'आया है' में तुक मिलती है, जबकि तीसरी पंक्ति 'माँ' पर समाप्त होती है। इसलिए इसकी तुक-योजना ककखक है। रुबाई के चारों चरण मिलकर एक स्वतंत्र भाव-इकाई बनाते हैं। यहाँ पहले दो चरणों में समस्या, तीसरे में माँ का उपाय और चौथे में बालक को संतुष्ट करने वाला कथन आता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह चार पंक्तियों वाला रुबाई छंद है, जिसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ तुकांत होती हैं।

त्वरित सुझाव: रुबाई पहचानते समय चार पंक्तियाँ गिनिए और पहली, दूसरी तथा चौथी के अंतिम शब्द मिलाइए।

9(ग). काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य।
- भाव-सौंदर्य स्पष्ट करते समय पात्रों की संवेदना और उनके व्यवहार का संबंध बताया जाता है।

चरण 1: बालमन की निश्छलता आँगन में बालक चाँद पाने की ज़िद कर रहा है। दूर चमकता चाँद उसे आकर्षित करता है और वह उसे अपना खिलौना बनाना चाहता है। उसकी ठुनक और हठ बालमन की सरलता, कौतूहल तथा कल्पनाशीलता को प्रकट करते हैं। बच्चा अपनी इच्छा की असंभवता को नहीं समझता।

चरण 2: माँ की ममता और सूझबूझ माँ बच्चे पर क्रोध नहीं करती; वह उसकी भावना समझकर उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है। उसका कहना कि चाँद आईने में उतर आया है, बालक की कल्पना के स्तर पर उसे संतुष्ट करने का स्नेहपूर्ण उपाय है। इस छोटे घरेलू दृश्य में मातृवात्सल्य और बच्चे को बहलाने की सहज सूझबूझ सुंदर ढंग से व्यक्त हुई है। बालक की इच्छा को सम्मान देने से यह दृश्य और भी आत्मीय बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य बालक की निश्छल ज़िद और माँ के वात्सल्यपूर्ण, समझदार व्यवहार में निहित है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में केवल घटना न दोहराएँ; बच्चे की निश्छलता और माँ की ममता का अर्थ भी खोलिए।

10(क). 'आत्मपरिचय' कविता के आधार पर कवि की परिचायक तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि का व्यक्तित्व।
- कवि की विशेषताएँ उसके संसार से संबंध, जीवन-दृष्टि और अभिव्यक्ति से पहचानी जाती हैं।

चरण 1: स्नेह और संवेदना से भरा व्यक्तित्व कवि संसार और जीवन के दायित्वों का भार उठाता है, फिर भी उसके जीवन में प्रेम की कमी नहीं है। 'स्नेह-सुरा' का संकेत बताता है कि कठिनाइयों के बीच भी उसका हृदय प्रेम और आत्मीयता से भरा है। वह संबंधों से पूरी तरह कटकर जीने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का पोषक है।

चरण 2: स्वतंत्र और स्वप्नशील जीवन-दृष्टि कवि जगत की परवाह किए बिना अपनी अंतःप्रेरणा के अनुसार जीता है। उसे संसार के बनाए मानदंडों के सामने अपने मन के सत्य और स्वप्न अधिक प्रिय हैं। वह अपने कल्पना-जगत का निर्माण करता है और अपनी राह चुनता है। इस प्रवृत्ति में उसकी स्वतंत्र चेतना, स्वप्नशीलता और आत्मविश्वास व्यक्त होते हैं।

चरण 3: दुःख को गीत में बदलने की क्षमता कवि के स्वर में केवल उल्लास नहीं, उसके भीतर के दुःख का स्पर्श भी है। वह अपनी पीड़ा को गीत और मस्ती में ढालकर दूसरों तक पहुँचाता है। उसके व्यक्तित्व में व्यथा और उल्लास साथ रहते हैं; इसीलिए उसका गायन बनावटी प्रसन्नता नहीं, जीवन की विषमताओं से निकली कलात्मक अभिव्यक्ति है। इस प्रकार कवि अपनी निजी अनुभूति को व्यापक मानवीय अनुभव बना देता है। उसका गीत श्रोता को सुख-दुःख दोनों के बीच जीवन से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि स्नेहशील और संवेदनशील, स्वतंत्र तथा स्वप्नशील, और दुःख को गीत-मस्ती में बदलने वाला सर्जक है।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताएँ अलग-अलग लिखिए और प्रत्येक को कविता के किसी भाव या बिंब से पुष्ट कीजिए।

10(ख). बात यदि सीधी थी तो उलझ कैसे गई ? 'बात और भाषा के संबंध पर' कविता के आधार पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सीधी बात सहज अनुभूति और स्पष्ट आशय का प्रतीक है।
- भाषा का उद्देश्य कथ्य को संप्रेषित करना है; अनावश्यक अलंकरण उसके अर्थ को उलझा सकता है।

चरण 1: सीधी बात के उलझने का कारण कवि के मन में बात स्पष्ट थी, किंतु वह उसे सीधे कहने के स्थान पर प्रभावशाली भाषा में व्यक्त करना चाहता था। वह भाषा को टटोलता और शब्दों को उलटता-पलटता रहा। चमत्कार पैदा करने के इस प्रयास में उसका ध्यान मूल बात से हटकर अभिव्यक्ति की सजावट पर केंद्रित हो गया। इससे सहज बात कठिन होती गई और उसका स्वाभाविक अर्थ खोने लगा।

चरण 2: बात और भाषा के संबंध की व्याख्या कविता इस स्थिति को पेच कसने की प्रक्रिया से समझाती है। पेच को जरूरत से अधिक कसने पर उसकी चूड़ियाँ नष्ट हो जाती हैं; वैसे ही भाषा पर अनावश्यक जोर देने से बात की पकड़ ढीली पड़ जाती है। फिर उसे खोलना और मूल रूप में कहना कठिन होता है। कवि का आशय है कि भाषा भाव के अनुकूल, सहज और स्पष्ट होनी चाहिए। केवल शब्दों का कौशल सफल संप्रेषण का प्रमाण नहीं है। भाषा को साधन के स्थान पर साध्य बना लेने से यह कठिनाई उत्पन्न होती है। सहज अभिव्यक्ति का अर्थ विचारहीन या कमजोर भाषा नहीं, बल्कि ऐसी भाषा है जो अर्थ को बिना बाधा के पाठक तक पहुँचा सके। कविता रचनाकार को अपनी बात की स्वाभाविकता बचाए रखने की सीख देती है।

चरण 3: निष्कर्ष बात भाषा को बनावटी और चमत्कारपूर्ण बनाने के प्रयत्न में उलझ गई। कविता कथ्य के अनुरूप सहज भाषा के प्रयोग का समर्थन करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले शब्दों के अनावश्यक फेरबदल का कारण लिखें, फिर पेच के बिंब से अर्थ की हानि स्पष्ट करें।

10(ग). 'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर साँझ के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में श्वेत बगुलों और काले बादलों का रंग-विरोध संध्या के सौंदर्य को उभारता है।
- प्रकृति का क्षणिक दृश्य कवि को इतना आकर्षित करता है कि वह उसमें बँधकर रह जाता है।

चरण 1: आकाश के दृश्य का चित्रण साँझ के समय आकाश में काले बादल छाए हैं। उन बादलों के बीच सफेद पंखों वाले बगुले पंक्तिबद्ध उड़ रहे हैं। अँधेरे रंग की पृष्ठभूमि पर उनके उजले पंख विशेष रूप से चमकते दिखाई देते हैं। यह दृश्य एक सुंदर चित्र जैसा लगता है। बादलों की कालिमा और बगुलों की श्वेतता मिलकर आकाश को आकर्षक रंग-संयोजन प्रदान करती हैं।

चरण 2: कवि पर सौंदर्य का प्रभाव उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति कवि की आँखों को बाँध लेती है। उनके पंखों की उजली छटा इतनी मनोहर है कि कवि अपनी दृष्टि वहाँ से हटा नहीं पाता। उसे लगता है कि यह सौंदर्य उसे अपनी ओर खींच रहा है। दृश्य निरंतर बदलने वाला है, इसलिए कवि उसे कुछ देर और ठहरा हुआ देखना चाहता है। इस प्रकार साँझ केवल अँधेरा उतरने का समय नहीं रह जाती, बल्कि प्रकृति के सम्मोहक और गतिशील सौंदर्य का अनुभव बन जाती है। कवि के लिए यह सौंदर्य केवल रंगों का आकर्षण नहीं है; उड़ते पंखों की गति भी उसे मुग्ध करती है। दृश्य की क्षणभंगुरता उसे और मूल्यवान बनाती है। इसलिए कविता में प्रकृति को देखने के साथ उस अनुभव को थाम लेने की उत्कट इच्छा भी अभिव्यक्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष काले बादलों के बीच उड़ते सफेद बगुलों की पंक्ति साँझ के आकाश को मनोहर बना देती है। इस अनुपम छटा में कवि की दृष्टि बँध जाती है।

त्वरित सुझाव: काले बादल, सफेद पंख और कवि की बँधी दृष्टि—इन तीन बिंदुओं से संध्या का चित्र पूरा करें।

11. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे । [8 अंक]

11(क). पहलवान की ढोलक किसे ललकारती थी और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में रात्रि की विभीषिका भय, निराशा और मृत्यु के आतंक का वातावरण है।
- ढोलक की चुनौती का अर्थ रोग का उपचार नहीं, बल्कि मनुष्य में साहस भरना है।

चरण 1: ढोलक की चुनौती का लक्ष्य पहलवान की ढोलक रात की विभीषिका को ललकारती थी। महामारी से पीड़ित गाँव में अँधेरा, सन्नाटा और मृत्यु का डर छाया रहता था। लोग रोग और उपचार के अभाव से लगभग निष्प्राण हो गए थे। ऐसे वातावरण में ढोलक की गूँज निराशा और भय के विरुद्ध चुनौती बनकर उठती थी।

चरण 2: ललकारने का उद्देश्य ढोलक की आवाज सुनकर लोगों को दंगल का उत्साह याद आता था और उनके भीतर जीने का साहस जागता था। वह रोग दूर नहीं करती थी, किंतु टूटे हुए मन को शक्ति देती थी। इसीलिए लेखक ने उसे रात के आतंक को चुनौती देने वाली शक्ति कहा है। उसकी ताल निरंतर सुनाई देकर भयावह सन्नाटे को भी तोड़ती थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक रात्रि की भयावहता और मृत्यु के आतंक को ललकारती थी, क्योंकि उसकी ध्वनि असहाय ग्रामीणों में साहस और संजीवनी जैसी मानसिक शक्ति भरती थी।

त्वरित सुझाव: किसे के उत्तर में रात्रि की विभीषिका लिखें और क्यों के उत्तर में भय दूर करके साहस जगाने का प्रभाव समझाएँ।

11(ख). मरणासन्न लोगों पर ढोलक का क्या प्रभाव पड़ता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश ढोलक के मानसिक प्रभाव और औषधीय प्रभाव में स्पष्ट अंतर करता है।
- दंगल की स्मृति और ताल की ऊर्जा मरणासन्न लोगों के भय को कम करती है।

चरण 1: शक्तिहीन लोगों में ऊर्जा ढोलक की आवाज सुनते ही गाँव के बूढ़ों, बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य घूमने लगता था। उनके निष्क्रिय स्नायुओं में मानो बिजली दौड़ जाती थी। इस कथन से स्पष्ट है कि संगीत उन्हें उत्साह और जीवन की हलचल का अनुभव कराता था।

चरण 2: मृत्यु के भय में कमी ढोलक की ध्वनि से उनका बुखार उतरता नहीं था और महामारी भी नहीं रुकती थी। फिर भी उन्हें मानसिक सहारा मिलता था। वे मृत्यु से घबराते नहीं थे और अंतिम समय में आँखें मूँदते हुए भयजनित कष्ट अनुभव नहीं करते थे। इस प्रकार उसकी सबसे बड़ी देन निर्भयता और आत्मबल थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक मरणासन्न लोगों में उत्साह और आत्मबल भरती थी। उससे रोग नहीं मिटता था, किंतु मृत्यु का भय घट जाता था और अंतिम क्षण सहज बनते थे।

त्वरित सुझाव: शारीरिक रोग दूर होने का दावा न करें; उत्साह, मानसिक सहारा और मृत्यु से निर्भयता को प्रभाव के रूप में लिखें।

11(ग). लेखक ने दंगल के दृश्य की चर्चा किस उद्देश्य से की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंगल जीवन-शक्ति, संघर्ष और उत्साह का दृश्य है।
- लेखक निष्प्राण ग्रामीणों और ऊर्जावान दंगल के दृश्य का विरोध रखकर ढोलक का प्रभाव दिखाता है।

चरण 1: दंगल की स्मृति का आशय ढोलक की ताल सुनकर शक्तिहीन ग्रामीणों की आँखों में दंगल का दृश्य नाचने लगता था। दंगल में शरीर की फुर्ती, संघर्ष और जीतने की इच्छा होती है। इसलिए उसका स्मरण रोगियों को निष्क्रियता से निकालकर जीवन की सक्रियता और उत्साह का मानसिक अनुभव कराता था।

चरण 2: लेखक के उद्देश्य की स्पष्टता लेखक इस चर्चा द्वारा बताना चाहता है कि ढोलक की ध्वनि लोगों पर संजीवनी जैसा प्रभाव डालती थी। जिस शरीर में शक्ति नहीं बची थी, उसमें भी मानो बिजली दौड़ उठती थी। दंगल का बिंब इस प्रभाव को सजीव बनाता है और दिखाता है कि कला विपत्ति में मनुष्य का मनोबल बनाए रख सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल का उल्लेख ढोलक की जीवनदायिनी प्रेरणा को सजीव करने के लिए है। उसकी ताल रोगियों में संघर्ष का उत्साह और जीने का साहस जगाती थी।

त्वरित सुझाव: दंगल को केवल खेल न बताएँ; उसकी ऊर्जा को रोगियों की दुर्बलता से जोड़कर लेखक का उद्देश्य स्पष्ट करें।

11(घ). महामारी की सर्वनाशक शक्ति के सामने ढोलक की भूमिका समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी शरीर का विनाश करती है, जबकि ढोलक मनुष्य के साहस और मनोबल को सहारा देती है।
- गद्यांश ढोलक की सीमा स्वीकार करते हुए उसके मानवीय महत्त्व को स्थापित करता है।

चरण 1: महामारी के सामने सीमा गद्यांश स्पष्ट करता है कि ढोलक में न बुखार उतारने का गुण था, न महामारी की सर्वनाशक शक्ति को रोकने की क्षमता। अतः उसे दवा या रोग को समाप्त करने वाला साधन नहीं समझना चाहिए। ग्रामीण औषधि, उपचार और पथ्य के अभाव में बीमारी से जूझ रहे थे।

चरण 2: मानसिक संबल की भूमिका इस असहाय स्थिति में ढोलक की ताल उनके भीतर संजीवनी जैसी शक्ति भरती थी। दंगल की याद से उत्साह लौटता और मृत्यु का भय कम होता था। ढोलक बीमारी को हरा नहीं सकती थी, पर मनुष्य को आतंक के सामने पूरी तरह टूटने से बचाती थी। यही उसकी महत्त्वपूर्ण मानवीय और कलात्मक भूमिका थी।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी के सामने ढोलक रोगनिवारक साधन नहीं, मानसिक संबल थी। वह असहाय लोगों को साहस देकर मृत्यु के भय से मुक्त करती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ढोलक की सीमा और उसका मानसिक योगदान दोनों लिखें; तभी महामारी के सामने उसकी भूमिका स्पष्ट होगी।

अथवा

11. भारतीय कला और सौन्दर्यशास्त्र को कई रसों का पता है, उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है, जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को मालूम है, लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस-सिद्धान्त की माँग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता । 'रामायण' और 'महाभारत' में जो हास्य है वह दूसरों पर है और अधिकांशतः वह परसंताप से प्रेरित है । जो करुणा है वह अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है । संस्कृत नाटकों में जो विदूषक है वह राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीजियाँ अवश्य करता है, किंतु करुणा और हास्य का सामंजस्य उसमें भी नहीं है । अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसा ही माद्दा पैदा करने की शक्ति भारतीय विदूषक में कुछ कम ही नज़र आती है । [8 अंक]

11(क). भारत में हास्य रस को परसंताप से प्रेरित क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परसंताप का आशय दूसरों की पीड़ा, असुविधा या अपमान में आनंद लेने से है।
- गद्यांश में अपने ऊपर हँसने और दूसरों पर हँसने के बीच भेद किया गया है।

चरण 1: परसंताप का आशय समझना परसंताप से प्रेरित हास्य वह है जिसमें हँसने वाला किसी दूसरे की कठिनाई, कमज़ोरी या दुर्दशा को अपने मनोरंजन का विषय बनाता है। इसमें पीड़ित व्यक्ति के प्रति सहानुभूति प्रमुख नहीं होती। हँसी का लक्ष्य दूसरा व्यक्ति होता है; हँसने वाला स्वयं को उस स्थिति से अलग और श्रेष्ठ मानता है।

चरण 2: गद्यांश से कारण स्पष्ट करना लेखक के अनुसार रामायण और महाभारत में मिलने वाला हास्य प्रायः दूसरों पर केंद्रित है और अधिकांशतः परसंताप से उपजता है। दूसरों के कष्ट या उपहासपूर्ण स्थिति पर हँसने की प्रवृत्ति के कारण उसे परसंताप से प्रेरित कहा गया है। इसके विपरीत अपने ऊपर हँसना और अपनी ही कमज़ोरियों में हास्य देखना भारतीय विदूषक में कम दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत में हास्य को परसंताप से प्रेरित इसलिए कहा गया है कि वह प्रायः दूसरों की पीड़ा, दुर्दशा अथवा उपहासपूर्ण स्थिति से आनंद लेने पर आधारित है। उसमें आत्मपरिहास और पीड़ित के प्रति करुणा का मेल कम दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: परसंताप का अर्थ बताकर उसे दूसरों पर हँसने की प्रवृत्ति से जोड़ें।

11(ख). करुणा और हास्य का अभाव भारतीय परंपराओं के साथ क्यों नहीं दिखाई देता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भारतीय परंपरा हर्ष और विषाद तथा अनेक रसों के अस्तित्व को स्वीकार करती है।
- गद्यांश की मुख्य स्थापना करुणा के हास्य में रूपांतर के अभाव से संबंधित है।

चरण 1: प्रश्न का संदर्भ पहचानना गद्यांश में भारतीय परंपरा में करुणा और हास्य दोनों रसों की उपस्थिति मानी गई है। जीवन में सुख और दुःख आते रहते हैं, यह भी सभी सांस्कृतिक परंपराएँ जानती हैं। इसलिए यहाँ दोनों रसों के सर्वथा न होने का आशय नहीं है। मुख्य बात यह है कि करुणा का हास्य में बदलना और दोनों का एक ही अनुभव में सामंजस्य बनना भारतीय परंपरा में नहीं मिलता।

चरण 2: अलग-अलग प्रवृत्तियाँ स्पष्ट करना यहाँ हास्य प्रायः दूसरों पर, विशेषकर उनकी दुर्दशा पर, केंद्रित है; करुणा प्रायः सद्व्यक्तियों और कभी-कभी दुष्टों के लिए होती है। संस्कृत नाटकों का विदूषक राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीज़ियाँ करता है, पर उसमें भी करुणा और हास्य का सामंजस्य नहीं है। अपने ऊपर हँसने और दूसरों में ऐसी क्षमता जगाने की शक्ति भी उसमें कम है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय परंपरा में करुणा और हास्य अलग-अलग विद्यमान हैं, पर उनका परस्पर रूपांतरण और सामंजस्य नहीं दिखाई देता। दूसरों पर हँसने की प्रवृत्ति तथा आत्मपरिहास की कमी इसका कारण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों रसों की उपस्थिति और उनके सामंजस्य की कमी का अंतर स्पष्ट रखें।

11(ग). भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में सामान्यतः करुणा के पात्र कौन हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में करुणा के पात्रों के संबंध में दिया गया स्पष्ट कथन है।
- सामान्य प्रवृत्ति और कभी-कभार होने वाले अपवाद को अलग रखना चाहिए।

चरण 1: सामान्य पात्र पहचानना भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की जिस परंपरा का उल्लेख गद्यांश में हुआ है, उसमें सामान्यतः सद्व्यक्ति करुणा के पात्र होते हैं। उनकी पीड़ा और विपत्ति पाठक या दर्शक के मन में सहानुभूति जगाती है। सद्गुणी व्यक्ति का दुःख उपहास का विषय बनने के स्थान पर संवेदना का विषय बनता है। इसलिए उसके प्रति दया और करुणा का भाव उत्पन्न होता है।

चरण 2: अपवाद और कारण बताना लेखक ने स्पष्ट किया है कि करुणा कभी-कभार दुष्टों के लिए भी होती है। इस प्रकार दुष्ट व्यक्ति करुणा के सामान्य पात्र नहीं हैं, किंतु उनकी पीड़ाजनक दशा भी किसी प्रसंग में सहानुभूति जगा सकती है। गद्यांश में इस कथन का उद्देश्य यह बताना है कि करुणा और दूसरों पर केंद्रित हास्य की धाराएँ अलग हैं; करुणा का हास्य में बदलना यहाँ सामान्य प्रवृत्ति नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सामान्यतः सद्व्यक्ति करुणा के पात्र हैं, क्योंकि उनके दुःख और कष्ट सहानुभूति उत्पन्न करते हैं। कभी-कभार दुष्टों की पीड़ाजनक अवस्था भी करुणा जगा देती है।

त्वरित सुझाव: सद्व्यक्तियों को सामान्य पात्र और दुष्टों को कभी-कभार का अपवाद बताना न भूलें।

11(घ). विदूषक का क्या तात्पर्य है ? भारतीय विदूषक की विशेषता क्या बताई गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विदूषक संस्कृत नाटकों का हास्य उत्पन्न करने वाला पात्र है।
- गद्यांश में विदूषक की सीमा आत्मपरिहास और करुणा-हास्य के सामंजस्य से पहचानी गई है।

चरण 1: विदूषक का अर्थ बताना विदूषक नाटक का वह पात्र है जो अपनी बातों, व्यवहार और विनोदपूर्ण टिप्पणियों से हास्य उत्पन्न करता है। संस्कृत नाटकों के संदर्भ में वह राजव्यक्तियों से भी कुछ छेड़छाड़ या धृष्टता कर सकता है। इस कारण उसकी भूमिका केवल सामान्य संवाद करने वाले पात्र की नहीं, बल्कि हँसी उत्पन्न करने वाले नाटकीय पात्र की होती है।

चरण 2: गद्यांश में बताई विशेषता स्पष्ट करना भारतीय विदूषक की विशेषता बताते हुए लेखक कहता है कि वह राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीज़ियाँ अवश्य करता है, किंतु उसमें करुणा और हास्य का सामंजस्य नहीं मिलता। अपने ऊपर हँसने तथा दूसरों में भी वैसी ही क्षमता उत्पन्न करने की शक्ति उसमें कुछ कम है। उसकी हँसी आत्मपरिहास और करुणा के मेल तक नहीं पहुँचती। यही सीमा लेखक के विवेचन का मुख्य बिंदु है।

चरण 3: निष्कर्ष विदूषक हास्य उत्पन्न करने वाला नाटकीय पात्र है। भारतीय विदूषक राजव्यक्तियों से धृष्ट विनोद करता है, पर उसमें आत्मपरिहास की शक्ति और करुणा तथा हास्य का सामंजस्य कम दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद गद्यांश की दोनों सीमाएँ लिखें: सामंजस्य का अभाव और आत्मपरिहास की कमी।

12(क). भक्तिन अपनी जिठानियों की घृणा और उपेक्षा का शिकार क्यों बनी ? उनके कोप का फल भक्तिन को किस रूप में भुगतना पड़ा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के भक्तिन पाठ में ग्रामीण परिवार की पुत्र-प्रधान मानसिकता उजागर होती है।
- पुत्रियों के प्रति भेदभाव और श्रम का असमान विभाजन भक्तिन की उपेक्षा को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: घृणा और उपेक्षा का कारण भक्तिन की जिठानियों के पुत्र थे, जबकि भक्तिन ने बेटियों को जन्म दिया था। पुत्रों को परिवार का गौरव और बेटियों को कमतर मानने वाली मानसिकता के कारण जिठानियाँ अपने को उससे श्रेष्ठ समझती थीं। वे भक्तिन और उसकी बेटियों को घृणा तथा उपेक्षा की दृष्टि से देखती थीं। इस व्यवहार का कारण भक्तिन की कोई व्यक्तिगत कमी नहीं, बल्कि स्त्री और पुत्री के प्रति समाज में व्याप्त अन्यायपूर्ण भेदभाव था।

चरण 2: काम और भोजन में भेदभाव जिठानियाँ अपने पुत्रों की प्रशंसा और देखभाल में लगी रहती थीं, जबकि भक्तिन तथा उसकी बेटियाँ घर और खेत से जुड़े कठिन काम करती थीं। भक्तिन मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती और राँधती थी। उसकी छोटी लड़कियाँ गोबर उठाने, कंडे पाथने जैसे काम करती थीं। दूसरी ओर जिठानियों के लड़कों को दूध, मलाई और राब मिलता था; भक्तिन की बेटियाँ चने-बाजरे की रोटी और घुघरी से पेट भरती थीं।

चरण 3: कोप के परिणाम का विवेचन इस प्रकार जिठानियों के कोप का फल भक्तिन को अत्यधिक श्रम, अपमान और उपेक्षा के रूप में भुगतना पड़ा। उसकी बेटियाँ भी समान स्नेह, आराम और अच्छे भोजन से वंचित रहीं। पाठ का यह प्रसंग दिखाता है कि बेटियों को जन्म देने के कारण माँ और बेटियों दोनों को दंडित किया जाता था, जबकि परिवार का बहुत-सा श्रम उन्हीं के कंधों पर था।

चरण 4: निष्कर्ष बेटियों को जन्म देने के कारण भक्तिन पुत्रों वाली जिठानियों की घृणा और उपेक्षा का शिकार बनी। उसे और उसकी बेटियों को कठिन परिश्रम, भोजन में भेदभाव तथा अपमान सहना पड़ा।

त्वरित सुझाव: कारण में पुत्र-प्रधान मानसिकता और परिणाम में श्रम तथा भोजन का भेदभाव स्पष्ट करें।

12(ख). किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता देते हैं और कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र कुमार के बाज़ार दर्शन में आवश्यकता की स्पष्ट पहचान को विवेकपूर्ण खरीदारी का आधार माना गया है।
- बाज़ार की सार्थकता उपयोगी वस्तुओं के आदान-प्रदान से है, दिखावे और अनावश्यक संचय से नहीं।

चरण 1: सार्थकता देने वाले व्यक्ति की पहचान बाज़ार को वे व्यक्ति सार्थकता देते हैं जो अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से जानते हैं। वे तय करके जाते हैं कि उन्हें क्या चाहिए और उसी उपयोगी वस्तु को खरीदते हैं। चकाचौंध देखकर हर वस्तु पाने की इच्छा उन्हें अपने वश में नहीं करती। उनकी खरीदारी का आधार वास्तविक ज़रूरत होती है, धन के प्रदर्शन या दूसरों से आगे निकलने की होड़ नहीं।

चरण 2: भगत जी के उदाहरण से समझना पाठ में भगत जी ऐसे ही विवेकशील ग्राहक हैं। वे बाज़ार में बिकने वाली अनेक वस्तुओं से आकर्षित होकर अपना उद्देश्य नहीं भूलते। उन्हें जीरा और काला नमक खरीदना होता है, इसलिए वे पंसारी की दुकान से अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ लेकर लौटते हैं। आसपास की वस्तुओं की चमक उन्हें अनावश्यक खरीदारी के लिए विवश नहीं कर पाती।

चरण 3: बाज़ार को मिलने वाली सार्थकता ऐसे ग्राहक बाज़ार को मनुष्य की आवश्यकता पूरी करने वाला उपयोगी माध्यम बनाए रखते हैं। उनके आने से ज़रूरत की वस्तु उचित ग्राहक तक पहुँचती है और खरीद-बिक्री का स्वाभाविक उद्देश्य पूरा होता है। वे लालच, दिखावे और फिज़ूलखर्ची को प्रोत्साहित नहीं करते। इस तरह बाज़ार का संबंध जीवन की उपयोगिता से बना रहता है और वह केवल आकर्षण तथा असंतोष बढ़ाने का स्थान नहीं बनता।

चरण 4: निष्कर्ष अपनी ज़रूरत पहचानकर संयम और विवेक से खरीदारी करने वाले व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता देते हैं। भगत जी की तरह केवल आवश्यक वस्तुएँ खरीदकर वे बाज़ार को आवश्यकताओं की पूर्ति का उपयोगी माध्यम बनाए रखते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आवश्यकताओं की पहचान के साथ भगत जी का जीरा और काला नमक वाला उदाहरण जोड़ें।

12(ग). राजा साहब की कृपा का पात्र रहते हुए लुट्टन पहलवान की जीवनचर्या पर प्रकाश डालिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में लुट्टन का जीवन राजाश्रय में प्राप्त प्रतिष्ठा और सुविधा का परिचय देता है।
- पहलवानी की साधना, पर्याप्त भोजन और राजदरबार का संरक्षण उसकी दिनचर्या के प्रमुख आधार थे।

चरण 1: राजाश्रय और प्रतिष्ठा श्यामनगर के मेले में चाँद सिंह को हराने के बाद लुट्टन राजा साहब की कृपा का पात्र बन गया। राजा साहब ने उसकी बहादुरी से प्रसन्न होकर उसे अपने यहाँ रख लिया। वह राजदरबार का पहलवान बन गया और उसके खाने-पीने तथा पालन-पोषण का खर्च राजदरबार से चलने लगा। इस प्रकार बचपन के अभावों के स्थान पर उसके जीवन में निश्चित जीविका और सम्मान आ गया। उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई और वह अपने क्षेत्र का प्रतिष्ठित पहलवान माना जाने लगा।

चरण 2: नियमित अभ्यास और पुत्रों का प्रशिक्षण लुट्टन अपने शरीर को पुष्ट रखने के लिए भरपूर भोजन करता और नियमित कसरत तथा कुश्ती का अभ्यास करता था। मेलों और दंगलों में उसकी उपस्थिति आकर्षण का केंद्र होती थी। वह अपने दोनों पुत्रों को भी पहलवानी के गुर सिखाता था और उन्हें बलवान पहलवान बनाना चाहता था। ढोलक को वह अपना गुरु मानता था, इसलिए लड़कों को भी ढोलक की ताल पर ध्यान देकर कुश्ती के दाँव समझने का अभ्यास कराता था। राजाश्रय ने उसे अपनी कला सँवारने और अगली पीढ़ी को सिखाने का अवसर दिया।

चरण 3: निष्कर्ष राजा साहब की कृपा के समय लुट्टन का जीवन सम्मान, निश्चिंत भोजन-व्यवस्था, नियमित व्यायाम और पुत्रों को पहलवानी सिखाने में बीतता था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में राजाश्रय से मिली सुविधाएँ और पहलवान के दैनिक अभ्यास, दोनों पक्ष अवश्य लिखें।

12(घ). "'नमक' कहानी में भारत और पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मोहब्बत का नमकीन स्वाद मिला हुआ है ।" सिद्ध कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में नमक साझा स्मृतियों, आत्मीयता और मानवीय संबंधों का प्रतीक है।
- राजनीतिक विभाजन लोगों के बीच सीमाएँ खींच सकता है, पर उनकी स्मृतियों और प्रेम को समाप्त नहीं कर सकता।

चरण 1: वतन की स्मृति और प्रेम की सौगात कहानी की सिख बीबी विभाजन के बाद भारत में रहती हैं, किंतु लाहौर को अब भी अपना वतन मानती हैं। वे सफ़िया से लाहौरी नमक लाने का आग्रह करती हैं। यह आग्रह किसी महँगी वस्तु की चाह नहीं, अपने छूटे हुए घर और भूमि से जुड़ने की आकांक्षा है। सफ़िया भी उनकी भावना का आदर करके नमक लाने का निश्चय करती है। अलग देशों और समुदायों से संबंधित स्त्रियों के बीच यह आत्मीयता आरोपित भेदभाव को निष्प्रभावी कर देती है।

चरण 2: सीमा पर भी जीवित मानवीय आत्मीयता पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी नमक की बात सुनकर सिख बीबी की भावना समझता है। उसे भी अपने पुराने वतन की याद आती है; वह देहली को अपना वतन मानता है। वह नियमों की कठोरता से ऊपर उठकर सहानुभूति प्रकट करता है। भारतीय कस्टम अधिकारी सुनीलदास गुप्त ढाका को अपना वतन मानता है। इस प्रकार दोनों ओर के लोगों में अपने छूटे स्थानों के प्रति एक-सी ममता दिखाई देती है। राजनीतिक सीमाएँ उन्हें अलग करती हैं, पर स्मृतियाँ, विस्थापन की पीड़ा और प्रेम उन्हें जोड़ते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष नमक का साधारण-सा उपहार साझा संस्कृति और आत्मीयता का वाहक बनता है। कहानी सिद्ध करती है कि भारत-पाक की जनता के बीच आरोपित भेदभाव के बावजूद मोहब्बत का नमकीन स्वाद बना हुआ है।

त्वरित सुझाव: सिख बीबी, सफ़िया और दोनों कस्टम अधिकारियों के व्यवहार से प्रेम तथा साझा वतन-स्मृति का प्रमाण दें।

12(ङ). लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के स्वभाव में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच जीवन का उल्लास बनाए रखने की शक्ति देखते हैं।
- अवधूत सांसारिक आसक्ति से मुक्त, मस्त और निर्लिप्त साधक है; कालजयी वह है जो समय के आघात से पराजित न हो।

चरण 1: प्रतिकूलता में भी अविचल जीवन शिरीष भीषण गर्मी और लू के बीच भी फूलता रहता है। जब धरती और दूसरे पेड़-पौधे गरमी से व्याकुल हो जाते हैं, तब भी वह कोमल फूलों से भरा रहता है। वह बाहरी ताप और कठिनाइयों के सामने अपना स्वाभाविक सौंदर्य तथा प्रसन्नता नहीं छोड़ता। लेखक के लिए यह केवल वृक्ष की विशेषता नहीं, जीवन की एक बड़ी सीख है कि कठिन समय में भी मनुष्य अपना संतुलन और सृजनशीलता बनाए रख सकता है। इसी अपराजेय जीवनी-शक्ति के कारण शिरीष कालजयी जान पड़ता है।

चरण 2: अनासक्त अवधूत जैसा स्वभाव अवधूत की तरह शिरीष मस्त, निर्लिप्त और अनासक्त रहता है। वह परिस्थितियों से शिकायत करके अपना जीवन व्यर्थ नहीं करता, बल्कि जो जीवन-रस उपलब्ध है उसे ग्रहण कर खिलता है। उसकी मस्ती पलायन नहीं, विषम वातावरण में भी जीने और आनंद बाँटने की क्षमता है। लेखक इस गुण को ऐसी साधना मानता है जिसमें व्यक्ति सुख-दुःख के बाहरी प्रभाव से ऊपर उठकर अपने स्वभाव में स्थिर रहता है। इसीलिए शिरीष किसी निर्लिप्त साधक के समान दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष समय और मौसम के कठोर प्रहारों के बीच भी अपनी मस्ती, कोमलता और उल्लास बनाए रखता है; इसी अपराजेय और अनासक्त स्वभाव के कारण लेखक ने उसे कालजयी अवधूत कहा है।

त्वरित सुझाव: पहले कालजयी और अवधूत का अर्थ स्पष्ट करें, फिर गर्मी में फूलते शिरीष से दोनों का संबंध जोड़ें।

13(क). 'जूझ' कहानी के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना का शीर्षक शिक्षा पाने और व्यक्तित्व विकसित करने के निरंतर संघर्ष का संकेत है।
- शीर्षक की सार्थकता कथानायक की बाहरी बाधाओं तथा उसके भीतर जागती सृजनात्मक आकांक्षा, दोनों से स्पष्ट होती है।

चरण 1: शीर्षक का अर्थ और केंद्रीय संघर्ष 'जूझ' का अर्थ है कठिन परिस्थितियों से निरंतर संघर्ष करना। इस रचना का केंद्र आनंद की पढ़ने की तीव्र इच्छा और उसे रोकने वाली परिस्थितियों के बीच संघर्ष है। वह खेती तथा घरेलू कामों में उलझकर शिक्षा से वंचित हो रहा है, किंतु अपने जीवन को केवल उसी स्थिति तक सीमित नहीं रखना चाहता। उसे अनुभव होता है कि शिक्षा से ही जीवन को नई दिशा दी जा सकती है। इस प्रकार शीर्षक आरंभ से ही कथानायक की मानसिक बेचैनी और आगे बढ़ने के संकल्प को व्यक्त करता है।

चरण 2: पारिवारिक बाधाओं और श्रम से संघर्ष आनंद के पिता उसकी पढ़ाई की अपेक्षा खेत के काम को अधिक महत्त्व देते हैं। आनंद अपनी माँ के सहयोग से दत्ता जी राव की सहायता लेता है। उनके हस्तक्षेप से पिता उसे कुछ शर्तों पर स्कूल जाने की अनुमति देते हैं। अब उसे खेती के काम और पढ़ाई, दोनों निभाने होते हैं। वह स्कूल जाने से पहले काम करता है और शेष समय भी श्रम से मुक्त नहीं रहता। फिर भी अपनी इच्छा छोड़ने के बजाय उपलब्ध समय में पढ़ने का रास्ता निकालता है। यह परिस्थिति दिखाती है कि उसकी शिक्षा सहज मिली सुविधा नहीं, लगातार प्रयास का परिणाम है।

चरण 3: विद्यालय में आत्मविश्वास और कविता की साधना स्कूल लौटने पर आनंद को अपनी पिछली पढ़ाई की कमी तथा सहपाठियों के बीच संकोच से भी जूझना पड़ता है। वह परिश्रम से अपनी स्थिति सुधारता है। सौंदलगेकर मास्टर का कविता पढ़ाने का ढंग उसके भीतर कविता के प्रति रुचि जगाता है। वह लय, भाव और अभिव्यक्ति पर ध्यान देने लगता है तथा स्वयं कविता रचने का प्रयास करता है। खेत में काम करते हुए भी उसका मन शब्दों और कविताओं में लगा रहता है। इस सृजनात्मक साधना से उसमें आत्मविश्वास आता है और वह अपने व्यक्तित्व की संभावनाओं को पहचानता है।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' शीर्षक पूर्णतः सार्थक है, क्योंकि पूरी रचना आनंद के शिक्षा प्राप्त करने, श्रम और पारिवारिक विरोध पर विजय पाने तथा अपनी काव्य-प्रतिभा विकसित करने के संघर्ष को सामने लाती है। यह शीर्षक उसकी लगन, जिजीविषा और हार न मानने वाले स्वभाव का सटीक परिचायक है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक सिद्ध करते समय केवल उसका अर्थ न लिखें; शिक्षा की बाधाएँ, श्रम और काव्य-साधना के प्रसंग जोड़ें।

13(ख). ऐन फ्रेंक और पीटर के आपसी सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन और पीटर का संबंध युद्ध और नाज़ी अत्याचार के कारण छिपकर रहने वाले दो किशोरों के अकेलेपन, आत्मीयता की आवश्यकता और परस्पर विश्वास से विकसित होता है।
- इस संबंध में आकर्षण के साथ ऐन की आत्मसजगता और स्वतंत्र व्यक्तित्व की चेतना भी महत्त्वपूर्ण है। दोनों के स्वभाव का अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारंभिक दूरी और बदलता परिचय गुप्त आवास में ऐन और पीटर को लगभग समान परिस्थितियों में रहना पड़ता है। आरंभ में ऐन को पीटर संकोची, कम बोलने वाला और कुछ नीरस लगता है। वह स्वयं अधिक चंचल, अभिव्यक्तिशील तथा अपने अनुभवों को समझने के लिए उत्सुक है। इसलिए आरंभ से ही दोनों में गहरी मित्रता नहीं होती। साथ रहते हुए ऐन धीरे-धीरे पीटर के भीतर के अकेलेपन और संवेदनशीलता को पहचानती है। उसका परिचय बाहरी स्वभाव के मूल्यांकन से आगे बढ़कर मन की निकटता में बदलता है।

चरण 2: आत्मीयता और भावनात्मक सहारा भय, बंद जीवन और बड़ों के साथ मतभेदों के बीच ऐन किसी ऐसे साथी की आवश्यकता अनुभव करती है जो उसे समझ सके। पीटर के साथ बातचीत में वह अपने विचार और भावनाएँ बाँट पाती है। दोनों एक-दूसरे के निकट आने लगते हैं और यह मित्रता किशोरावस्था के आकर्षण का रूप भी ग्रहण करती है। पीटर के पास बैठना तथा उससे मन की बातें कहना

ऐन को सांत्वना देता है। इस आत्मीयता से स्पष्ट होता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य स्नेह, अपनापन और आशा की खोज करता है।

चरण 3: संबंध की सीमाओं का विवेकपूर्ण बोध ऐन केवल भावुक आकर्षण में बहने वाली किशोरी नहीं है। वह अपने और पीटर के व्यक्तित्व के अंतर पर भी विचार करती है। उसे लगता है कि पीटर को स्वयं मजबूत और आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता है। ऐन अपने भीतर के संघर्षों का सामना करके आगे बढ़ना चाहती है; वह यह भी समझती है कि किसी दूसरे पर पूरी तरह निर्भर होना उचित नहीं है। इसलिए उसके लिए पीटर की निकटता महत्त्वपूर्ण होते हुए भी जीवन के सभी प्रश्नों का समाधान नहीं बनती। इस आत्मपरीक्षण से उसके व्यक्तित्व की परिपक्वता सामने आती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन और पीटर का संबंध प्रारंभिक अपरिचय से मित्रता, विश्वास और भावनात्मक आकर्षण तक विकसित होता है। वह कठिन जीवन में दोनों को सहारा देता है, पर ऐन उसके साथ अपनी स्वतंत्रता और आत्मविकास का महत्त्व भी पहचानती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संबंध का क्रम दिखाइए: प्रारंभिक दूरी, संवाद से निकटता, भावनात्मक सहारा और अंत में ऐन का आत्मपरीक्षण।

---

14. 'डायरी के पन्ने' में ऐन फ्रेंक ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर जो विचार व्यक्त किए हैं, उनका विवेचन जीवन-मूल्यों की दृष्टि से कीजिए । आज उन मूल्यों और परिस्थितियों में कितना परिवर्तन आ सका है ? विस्तार से समझाइए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक स्त्री को पुरुष से कमतर मानने वाली सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठाती है। उसके विचार समानता, मानवीय गरिमा और स्त्री के योगदान की स्वीकृति पर आधारित हैं।
- वर्तमान से तुलना करते समय उपलब्धियों के साथ शेष असमानताओं को भी समझना चाहिए; अधिकार मिलना और दैनिक जीवन में समान व्यवहार मिलना अलग स्थितियाँ हैं।

चरण 1: स्त्री की उपेक्षा पर ऐन के विचार ऐन इस बात से व्यथित है कि समाज ने लंबे समय तक पुरुष को प्रधानता दी और महिलाओं को उनके श्रम तथा योग्यता का उचित सम्मान नहीं दिया। शारीरिक शक्ति को श्रेष्ठता का आधार बनाकर पुरुषों ने स्त्रियों पर अधिकार स्थापित किया। ऐन इस व्यवस्था को स्वाभाविक या न्यायपूर्ण नहीं मानती। उसके अनुसार महिलाओं के संघर्ष, सहनशीलता और मानव समाज के निर्माण में उनकी भूमिका को स्वीकार करना आवश्यक है। स्त्रियों को अधिकार प्राप्त हुए हैं, किंतु समाज की मानसिकता में जड़ें जमाए भेदभाव केवल अधिकारों की घोषणा से समाप्त नहीं होता।

चरण 2: मातृत्व और मानवीय गरिमा ऐन प्रसव की पीड़ा और मातृत्व के दायित्व की ओर ध्यान दिलाकर स्त्री की साहसपूर्ण भूमिका रेखांकित करती है। समाज अक्सर युद्ध करने वाले पुरुष की वीरता का गुणगान करता है, लेकिन नए जीवन को जन्म देने वाली स्त्री के कष्ट और धैर्य को उतना महत्त्व नहीं देता। इस तुलना का आशय स्त्री के अदृश्य योगदान को पहचानना है। जीवन-मूल्यों की दृष्टि से उसके विचार न्याय, संवेदना, कृतज्ञता और समान सम्मान का आग्रह करते हैं। स्त्री को केवल दूसरों की सेवा करने वाला प्राणी समझना उसकी स्वतंत्र मानवीय पहचान का अपमान है।

चरण 3: आज की उपलब्धियाँ और शेष चुनौतियाँ आज शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। वे विज्ञान, प्रशासन, खेल, साहित्य तथा नेतृत्व के क्षेत्रों में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं। लड़कियों की शिक्षा और निर्णय लेने की स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। फिर भी परिवर्तन सभी परिवारों और वर्गों में समान नहीं हुआ है। घरेलू काम और देखभाल की जिम्मेदारी प्रायः महिलाओं पर अधिक रहती है। सुरक्षा का अभाव, अवसरों में भेदभाव, रूढ़ धारणाएँ और पुत्र को प्राथमिकता देना जैसी समस्याएँ अभी बनी हुई हैं। इसलिए कुछ सफल उदाहरणों के आधार पर पूर्ण समानता का दावा नहीं किया जा सकता।

चरण 4: अपेक्षित सामाजिक परिवर्तन वास्तविक परिवर्तन के लिए स्त्रियों की इच्छा, श्रम और निर्णय का सम्मान होना चाहिए। परिवार में जिम्मेदारियाँ बाँटना, शिक्षा और काम के समान अवसर देना तथा हिंसा और अपमान के विरुद्ध खड़ा होना आवश्यक है। मातृत्व का सम्मान करते हुए स्त्री के व्यक्तित्व को केवल उसी भूमिका तक सीमित नहीं करना चाहिए। ऐन के विचार तभी सार्थक होंगे जब समानता व्यवहार का हिस्सा बनेगी।

चरण 5: निष्कर्ष ऐन का चिंतन स्त्री की गरिमा और समान अधिकारों का समर्थन करता है। आज परिस्थितियों में पर्याप्त सुधार आया है, पर सामाजिक व्यवहार और सोच में पूर्ण समानता अभी शेष है। न्याय, संवेदना और पारस्परिक सम्मान को जीवन में अपनाना ही उसके विचारों की सार्थक परिणति है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो पक्ष स्पष्ट रखिए: पहले ऐन के विचारों से जीवन-मूल्य निकालिए, फिर आज की उपलब्धियों तथा बची हुई असमानताओं की संतुलित तुलना कीजिए।